आपके बच्चों को इंटैलीजैंट बनाने वाला अद्‌भुत नॉलिज बैंक

बच्चों के मस्तिष्क में घुमड़ने वाले सैकड़ों अनबुझे 'क्यों और कैसे ?' जिज्ञासा भरे प्रश्नों के उत्तर बताने वाला अनूठा प्रकाशन



बड़ा साइज
240 पृष्ठ

मूल्य 20/-
डाकखर्च : 4/-

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक
Volume-I

'जनरल नालिज' की अन्य सभी पुस्तकों से परे हटकर अपने किस्म की भारत की पहली पुस्तक जिसमें दिए गए सैकड़ों प्रश्नों में से कुछ की झलक

- लोग गंजे क्यों होते हैं ?
- ओलम्पिक खेल क्या है ?
- लोग बेहोश क्यों होते हैं ?
- आदमी बूढ़ा क्यों होता है ?
- बैंक की शुरूआत कैसे हुई ?
- आंधी और तूफान कैसे आते हैं ?
- चश्मे से सही कैसे दिखाई देता है ?
- महिलाओं की दाढ़ी क्यों नहीं होती ?
- आतिशबाजी रंगीन क्यों दिखती है ?
- सूर्य प्रातः-सायं लाल क्यों दिखता है ?
- बन्द आंखों से हम सीधे क्यों नहीं चल पाते ?

नॉलिज बैंक की अपनी ही विशेषताएं

★ पढ़ाई से जी चुराने वाले बच्चों में पढ़ने का शौक पैदा करके उनका दिमागी स्तर बढ़ाती है।

★ होशियार बच्चों की जानकारी और बढ़ाकर उन्हें इण्टैलीजैण्ट बनाती है।

★ ऐसे-ऐसे प्रश्न, जिनके उत्तर मां-बाप और टीचर भी नहीं दे पाते।

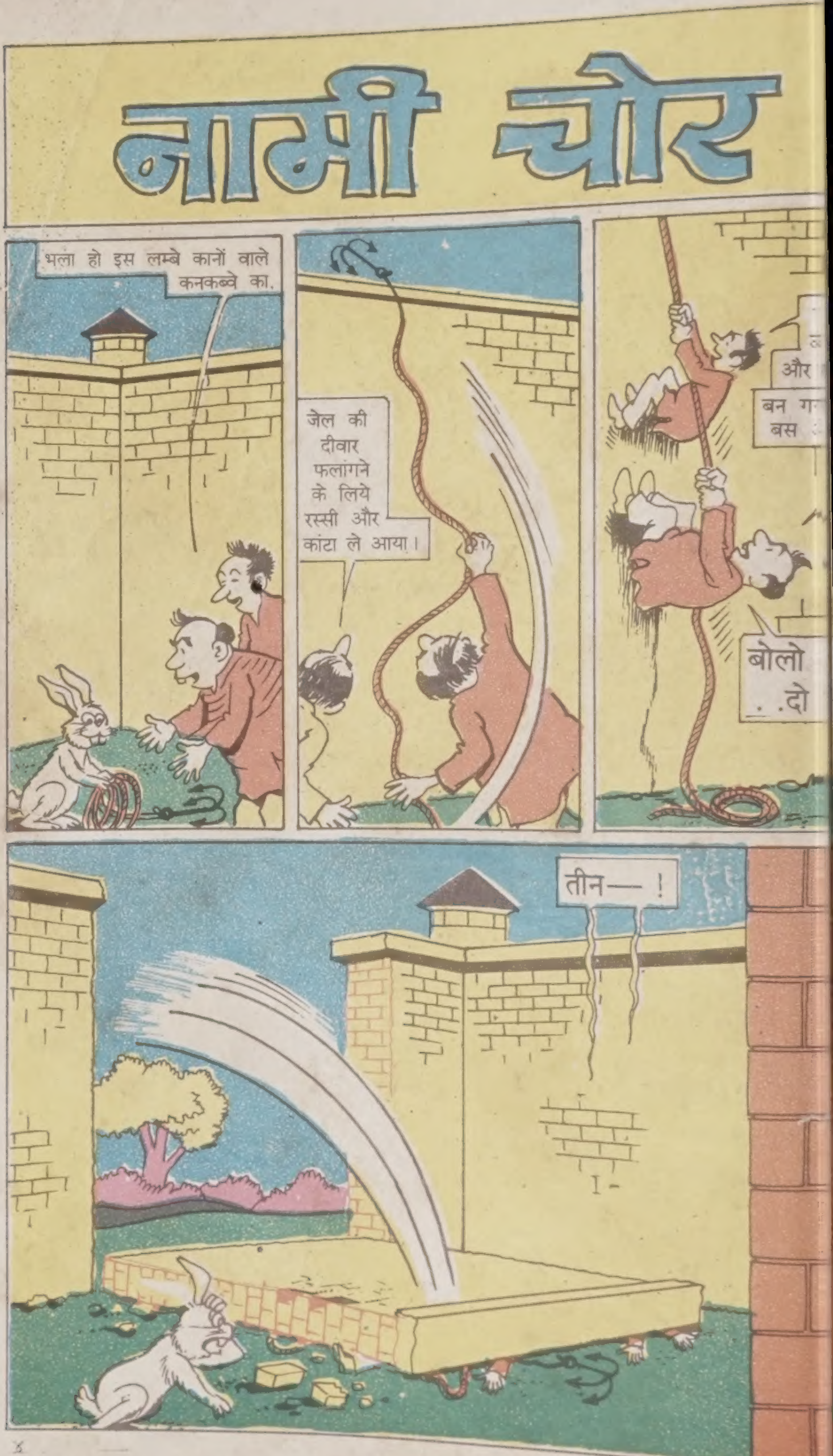
★ हर प्रश्न का उत्तर चित्रों सहित बच्चों की अपनी सरल भाषा में।

★ अनुभवी सम्पादक मण्डल द्वारा सम्पादित एक प्रामाणिक पुस्तक।

स्त्री-पुरुषों, पशु-पक्षियों, प्रकृति, भूमण्डल, जीव-विज्ञान, समुद्र आदि से सम्बन्धित अजीबो-गरीब प्रश्नों के उत्तर तथा वैज्ञानिक आविष्कारों की पूर्ण जानकारी।

अपने निकट के बुक स्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुक स्टालों पर मांग करें अन्यथा वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का पता।

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006


नामी चोर
भला हो इस लम्बे कानों वाले कनकव्वे का.
जेल की दीवार फलांगने के लिये रस्सी और कांटा ले आया।
और
बन
बस
बोलो
. .दो
तीन— !

दीवाना

अंक : १० वर्ष : १७ १७ मई १९८१

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
पसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

र्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
र्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
क प्रति	:	१.५० रुपये

मुख पृष्ठ पर

म बम भोला
प का यह गोला
कर मैं आया जापान से,
ट जाओ शशि
ट जाओ हेमा
टकरा न जाऊं कहीं आपसे।

आगामी अंक में

रेगिंग किट

••••••••••••••

कुछ नई
अनपेटेन्ट दवाइयां

••••••••••••••

मुफ्त पोस्टर
कमलाहसन

आपके पत्र

दीवाना पढ़ा। सभी स्तम्भ रोचक लगे, खासकर खेल के मैदान में, मोटू पतलू का स्तम्भ पसन्द आया। अगर सच पूछा जाये तो दीवाना जैसी रोचक और ज्ञान वर्धक पत्रिका शायद ही कोई हो। क्यों और कैसे स्तम्भ अत्यन्त ज्ञान वर्धक है, इससे नई-नई बातें मालूम होती हैं।

भगवान करे दीवाना देश-विदेश में फैल जाए। परोपकारी, अर्थ-अनर्थ चिल्ली लीला आदि स्तम्भ फिर से आरम्भ करने की कृपा करें। दीवाना का दीवाना। **शैलेन्द्र कुमार,**

मैं दीवाना का कई वर्ष से नियमित पाठक हूँ। सचमुच दीवाना हास्य पत्रिकाओं की रानी है, इसकी जितनी भी तारीफ की जाये कम है। मैं भी आपकी पत्रिका में हास्य कवितायें छपवाना चाहता हूँ, इसके लिये क्या करना होगा, कृपया लिखिये।

प्रमोद कुमार केड़िया—हावड़ा।

कविता हास्य पूर्ण तथा बिना छपी होनी चाहिये। —सम्पादक

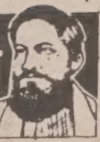
दीवाना का नया अंक प्राप्त हुआ। इसी अंक के सभी फीचर बेहतरीन थे। खास कर मोटू पतलू, फैण्टम और दीवाना पोस्टर बहुत अच्छे लगे। इस अंक के अन्य फीचर जैसे काका के कारतूस तथा आपस की बातें बहुत बढ़िया रही।

दीवाना में अब नई साज सज्जा के कारण, किसी प्रकार भी जगह की कमी नहीं है इसलिये यदि नये नये फीचर भी आरम्भ किये जायें तो अच्छा रहे। नया उपन्यास 'चकती आँख तथा तीन जासूस' बहुत अच्छी तथा रहस्यपूर्ण चल रही है। ऐसे ही उपन्यास आईन्दा भी छापते रहें। धन्यवाद !

सुरेश कुमार—फरीदाबाद।

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



राजेंद्र कुमार 'तारन', हिरदागढ़

प्र० कुछ लड़कियाँ, किसी बात का गलत अर्थ क्यों लगा लेती हैं?

उ० बैल जा रहा सड़क पर, समझे उसको गाय।
जैसी जिसकी भावना, वैसा अर्थ लगाय।।

राजेश पाठक प्रवीण, जबलपुर

प्र० क्या प्रत्येक कार्य सोच-समझकर ही करना चाहिए?

उ० सोच-समझ में क्या रखा, भाग्य-भोग बलवान।
लग जाए तो तीर है, वरना तुक्का जान।।

किशन पालीवाल, नई दिल्ली-२

प्र० इंका सरकार ने ब्लैक मनी निकालने को बौंड क्यों जारी किए हैं?

उ० ब्लैक कीजिए प्रेम से, छोड़ सभी मतभेद।
इंदिराजी की कृपा से, काला होय सफेद।।

आनंद कुमार गुरुंग, दुलियाजान (असम)

प्र० आप अभी तक प्राचीनता के पुजारी क्यों बने हुए हैं?

उ० नई नवेली नौ दिना, दे तन-मन को स्वाद।
किंतु पुरानी प्रेमिका की है लंबी स्वाद

ख़ालिद इक़बाल, पुलकम्बो, सहारनपुर

प्र० आजकल लड़कियों के चक्कर में लड़के रहते हैं, या लड़कियाँ लड़कों के चक्कर में?

उ० खरबूजे के पेट पर छुरी गिरे गढ़ जाय।
अथवा ऊपर छूरी के, खरबूजा चढ़ जाय।।
यद्यपि हैं न्यारे-न्यारे, फर्क मत समझो प्यारे!

सुरेश कुमार प्रीतम, सिंकंद्राबाद (आंध्र प्रदेश)

प्र० मैं एक लड़की को प्यार करता हूं, लेकिन उसके प्यार का कैसे पता लगे?

उ० लैटर बैंरग डालकर, देखो कुछ दिन राह।
वापिस में नफरत समझ, स्वीकारे ता चाह।।

विनय होतवानी, रायपुर (म०प्र०)

प्र० काकाजी, आपका जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ० उन्निस सौ छह ईसवी, शुभ्र सितंबर मास।
अट्ठारह तारीख का, जन्म हाथरस खास।।

प्रेम बाबू शर्मा, बगीची पीरजी, दिल्ली

प्र० पत्नी कब ज्वाला का रूप दिखाती है?

उ० चंद्रमुखी के बाद वह, सूर्यमुखी बन जाय।
उम्र बढ़ी तेवर चढ़े, ज्वालामुखी कहाय।।

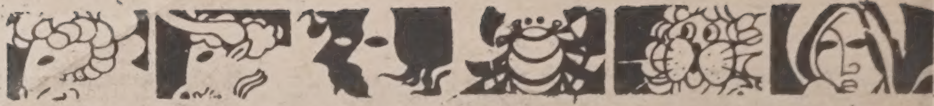
रामशेकर शैनी, भरसना (रायबरेली)

प्र० हिंसा पाप है, तो फिर इंसान जीव-जंतुओं की हत्या क्यों करता है?

उ० खटमल-मच्छर चूसते, जब मानव का रक्त।
पीने दे निज खून को, अंध अहिंसा-भक्त।।

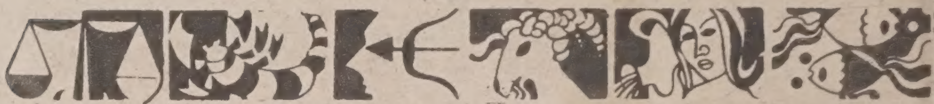
काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली - ११०००२.


होंगे बच्चे स्वस्थ
फले फूलेगा बचपन
इन्हें पिलाओ....
मुग़ली घुट्टी 555
अ. हा...!
मीथी-मीथी
MUGLI
JANAM
GHUTTI
555®
No 555
SRIRAM AYURVED BHAWAN
NAVIN SHAHDARA
DELHI 110032
पुष्ट व सदा निरोगी
रखने के लिए
पाँच वर्ष की आयु तक
दैनिक प्रयोग कराइए
बच्चों को स्वस्थ बनाइए
अनेकों
माता-पिता
द्वारा
प्रशंसित.....
श्रीराम आयुर्वेद भवन दिल्ली-110032



आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



मेष : आय में वृद्धि, अफसरों से मेल जोल, ऋण सम्बन्धी कामों में परेशानी, घर पर व्यर्थ का कलह-क्लेश, मित्र सहयोग देंगे, लाभ यथापूर्व होता रहेगा, व्यापार में सुधार, भाई बहनों से सुख सहयोग, यात्रा की आशा है।

वृष : कोई विशेष या अधूरा काम बनेगा, व्यापार में उन्नति, आय आशा अनुसार, यात्रा लाभप्रद, किसी नातेदार से बिगाड़, परिश्रम अधिक, परिवार से कुछ चिन्ता, कामधन्धा ठीक चलेगा, आर्थिक लाभ कुछ देर से मिलेगा।

मिथुन : हालात ठीक होने लगेंगे, शुभ कामों में रुचि, लाभ खर्च बराबर, अधूरा काम पूरा होगा, बड़ों की ओर से चिन्ता, कारोबार ठीक चलेगा, नई वस्तुओं की खरीद, आय उत्तम, समय भी अच्छा व्यतीत होगा।

कर्क : शारीरिक कष्ट या मानसिक चिन्ता, सुस्ती का प्रभाव रहेगा, हालात कुछ ठीक होंगे, परन्तु भाग्य पूरा साथ न देगा, धर्म कर्म में रुचि, अफसरों से मेल जोल, व्यापारिक क्षेत्र में सुधार, यात्रा भी हो सकती है, लाभ बढ़ेगा।

सिंह : व्यापार से यथार्थ लाभ, घरेलू सुख अच्छा मिलेगा, सेहत को संभाल कर रखें, चोट आदि लगने का डर है, घरेलू समस्याओं से परेशानी, खर्चा बढ़ेगा, परिश्रम अधिक, कामकाज का बोझ बढ़ेगा, लाभ देर से मिलेगा।

कन्या : व्यय अति अधिक, कामों में अड़चन बिना कारण ही आएगी, आय का साधन बने या वृद्धि हो, व्यय यथार्थ, परिवार से सुख, कामकाज ठीक चलेगा, हालात में सुधार होगा, सरकारी कामों में सफलता।

तुला : यात्रा हो तो सफल रहेगी, कामों में दिलचस्पी कम, आय यथार्थ होगी, व्यापार से लाभ बढ़ेगा, घरेलू योजनाओं पर व्यय अधिक, कामकाज का बोझ बढ़ेगा, यात्रा लाभप्रद रहेगी। परिवार से सुख।

वृश्चिक : वातावरण ठीक रहेगा, सोशल कामों में रुचि से मान बढ़ेगा, कारोबार की दशा संतोषजनक, लाभ भी समय पर होता रहेगा, बड़ों की कुछ चिन्ता, कारोबार मध्यम पर कामों में सफलता मिल जाया करेगी।

धनु : आय में वृद्धि पर देर से मिलेगी, कारोबार सुधरेगा, व्यय यथार्थ, आय उत्तम, परिवार से सुख, अफसरों से मेल जोल, साहस शक्ति दृढ़ रहेगी, आर्थिक लाभ आशा अनुसार होगा, मनोरंजन एवं नई वस्तुओं की खरीद पर व्यय

मकर : सावधानी से रहें, यात्रा में कष्ट, व्यय बढ़ेगा, हालात सुधरेंगे, सोशल कामों में रुचि, लाभ खर्च बराबर, यात्रा सफल, कारोबार ठीक चलेगा, बिगड़ा काम बनेगा, परिश्रम सफल, आय में वृद्धि।

कुम्भ : कोई शुभ सूचना या लाभ, स्त्री पक्ष से चिन्ता, आर्थिक तंगी, कामों में परेशानी या निराशा, भाईयों से सुख सहयोग, वातावरण ठीक रहेगा, भाग्य साथ देगा, परिश्रम द्वारा काम बनेंगे, शत्रु व रुकावटों पर विजय मिलेगी।

मीन : मुकदमें आदि के कामों में परेशानी, खर्चा बढ़ेगा, विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा अचानक करनी पड़ेगी, स्त्री की ओर से चिन्ता, मित्र सहयोग देंगे, परिश्रम अधिक, काम बनते रहेंगे, कारोबार पहले से सुधरेगा, भाग्य साथ देता दिखाई देगा।

मुलाकात एक गधे से

● राम स्वरूप विज

सैर को जाते समय आज प्रातः कल्लू धोबी के गधे के दर्शन हो गए। सवेरे-सवेरे जानवर के मुंह लगना अच्छा नहीं समझा मैंने। जरा बचकर निकलना चाहा मगर गधा रास्ता रोककर अड़ गया। मैं मिड आन पर आता तो गधा भी मिड आन की तरफ मुड़ता, मिड आफ को जाता तो गधा भी मिड आफ की ओर बढ़ता। मस्तिष्क पर जोर देकर विचार किया, मेरे खानदान की पांच-सात पीढ़ियों तक तो कोई एक भी मन्त्री तो क्या, मन्त्री का पियन (PEON) तक न बन पाया था फिर यह आज मेरा घेराव क्यों हो रहा है? मामला समझ से बाहर था। तभी समस्या पूर्ति करते हुए ढेंचू ढेंचू कर गधा बोला—"विज भाई! (यह रिश्ता मुझे कुछ पसन्द न आया था) बहुत दिनों बाद हाथ आए हो। जमाने भर के गम में तो यूं घुलते रहते हो जैसे पानी में बताशा। मगर हम दुःखियारों मुसीबत के मारों की भी कभी सुध ली है हम भी तो पड़े हैं तुम्हारी राहों में।

तुम कोई रैली क्यों नहीं करते? सुझाव दिया मैंने।

क्या पागलों सी बातें कर रहे हो? कल को कहोगे यू.एन.ओ. में वीटो क्यों नहीं करते? भले आदमी हमारी बेजुबान है। बेजुबान की जुबान आपसे लेखक भाई ही न समझोगे तो कौन समझेगा?

बार बार भाई क्यों कह रहे हो तुम मुझे?

वल्लाह! फर्क ही क्या है तुम्हारे और अपने में! हम चारपांव वाले गधे तुम दो पांव वाले। सींग दोनों में से किसी के सिर पर नहीं। गधे साधारणतया बोझ ही तो ढोते हैं। बोझ दफ्तर की फाइलों का भी हो सकता है, स्कूल की किताबों का भी और भरे पुरे कुनबे का भी। बस थोड़ा यहां अन्तर है चारपांव के गधे जहां बोझ अधिक होने पर अड़ जाते हैं, वहां दोपाए गधे बोझ कम होने पर (बशर्ते बोझ दहेज का हो, अड़ जाते हैं)। अड़ियलपन दोनों में सांझा ही तो है।

मुझे लगने लगा था कि यह गधा ज़रूर पिछले जन्म में कोई नेता रहा होगा या अगले जन्म में हो जाएगा। उसे मैंने नया तर्क देते हुए पूछा।

तुम्हारा दुलत्तियां झाड़ना, बिना डंडे खाए कदम न बढ़ाना, यूं सड़कों पर आवार घूमना हमसे भला कैसे मेल खा सकता है।

लगता है तुम्हारे राशनकार्ड में अक्ल का खाना खुदा ने खाली ही रखा है। सुनो, तुम्हारी सोसाइटी में दुलत्तियां झाड़ने वालों को 'बॉस' कहा जाता है। बिना चांदी का जूता खाए कोई भी 'बाबू' फाइल आगे नहीं सरकाता। यकीन न हो तो कभी कोई, कमेटी, कचहरी निगम में जाकर देख लेना। आवारा घूमने का समय नहीं हमारे पास। यदि कभी आना पड़े तो राह चलते सज्जन-सज्जनियों को देख न हिनहिनाते हैं न पूंछ हिलाते हैं।

मुझे तो पीछा छुड़ाना मुश्किल हो रहा था उस कमबख्त से। बात समाप्त करने के मूड में मैं ने कहा—



अच्छा बको मेरे भाई, तकलीफ क्या है तुम्हें ? संगत की रंगत मुझ पर चढ़ने लगी थी।

नोट कीजिए मेरा बयान। किसी भी राजनैतिक पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में राजकीय पशु बनाने के बारे में क्यों नहीं लिखा। हालांकि हर पार्टी में 'हम जैसों' की कमी नहीं। अध्यापक वर्ग विद्यार्थीयों को गाय पर ही निबन्ध क्यों लिखवाता है गधे पर क्यों नहीं ? गाय दूध देती है। दूध से पनीर बनता है, जिसे इन्सान खाता है। हम लीद करते हैं। लीद से गर्म मसाला बनता है, जो कि दूध से महंगा बिकता है। उसे भी इन्सान ही खाता है। हम गाय से कम हैं ? कैसे ? फिल्म वालों ने हाथी पर 'हाथी मेरे साथी', नाग पर नाग पंचमी', चीते पर मां', बाल पर 'धर्मवीर', मगरमच्छ पर 'शान', कुत्ते पर चौकीदार' बनाई। हमने क्या उनके बावा का खेत उजाड़ा है जो अभी तक हमारी सुध नहीं ली ? चुनाव आयोग ने चुनाव चिह्न के रूप में बैल, शेर ऊंट, घोड़ा, बाज, गाय-बछड़ा को मान्यता दे दी, हमें क्यों नहीं ? अभी तक कहीं कोई डाक टिकट हमारी याद में निकाला सरकार ने। आखिर क्यों नहीं ? लोकतन्त्र में समानता के अधिकारों से हमें वंचित क्यों रखा जा रहा है ?

कहने को वो गधा था मगर मेरा तो दिमाग चाट गया था। जानवर से मुंह लगने का अजीब सा मजा मिल रहा था। एक कदम आगे बढ़ाते हुए मैने कहा।

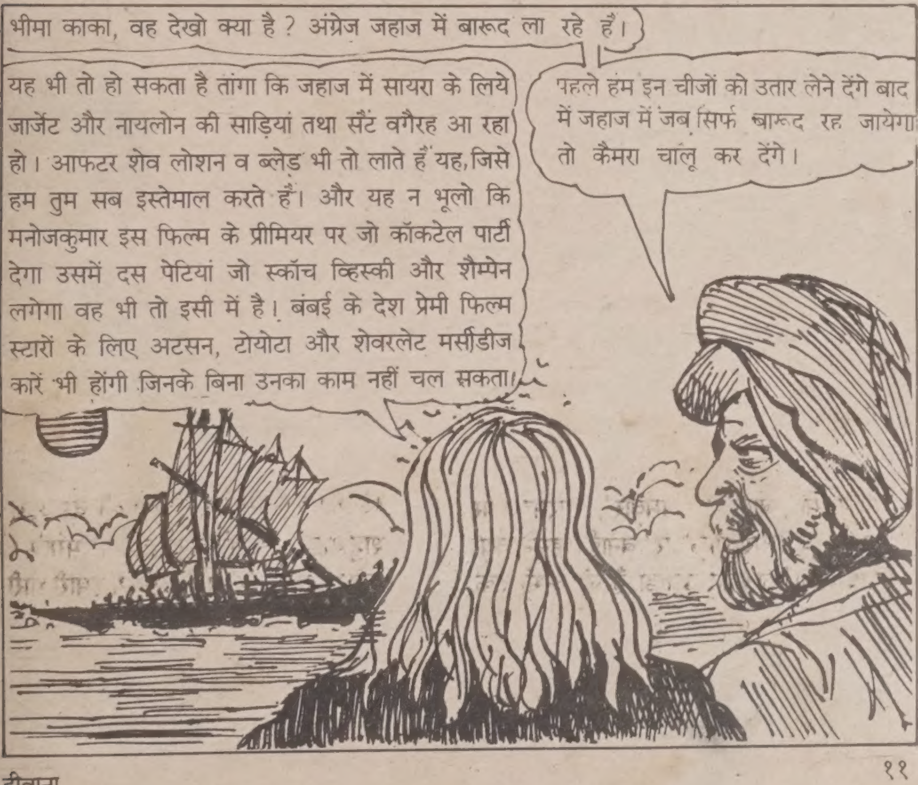
अच्छा जल्दी से अपनी पारी घोषित करो, मैं आज ही तुम्हारा बयान प्रैस में दे दूंगा। तुम्हारे दीवाने ज़रूर तुम्हारे गम में गमगीन होंगे।

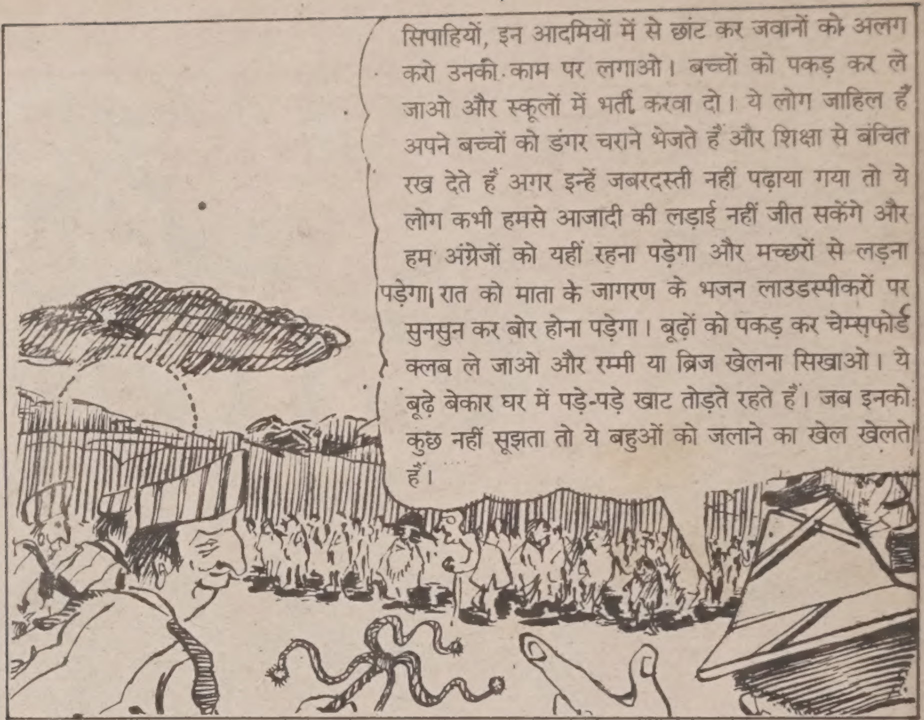
जाने से पहले दो शेर ज़रूर कहूंगा। दिल थमाके बैठना जरा।

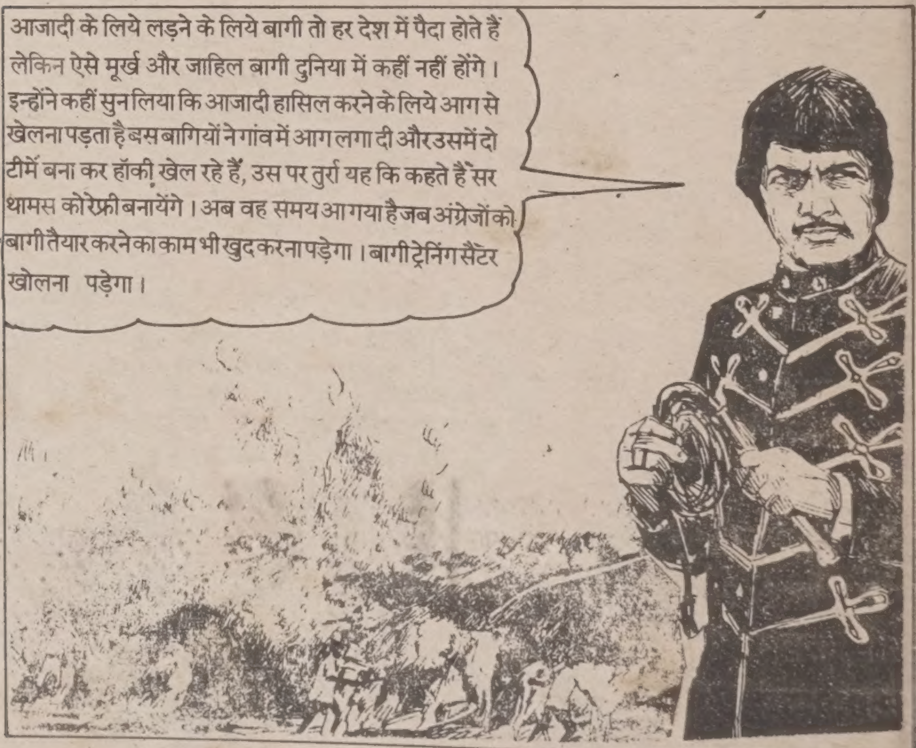
गधे में गुण बहुत हैं, सदा राखियो पास।
सुख दुःख आपद्काल में रहे आपका दास।।
रहे आपका दास घास, औरों की चर आवे।
शत्रु आयें सामने तो दुलत्ती मार भगावै।।
कहे गर्दभ सुनो रे साधो, महिमा हमारी भारी।
बने लीद से गर्म मसाला, आशिक करे सवारी।।

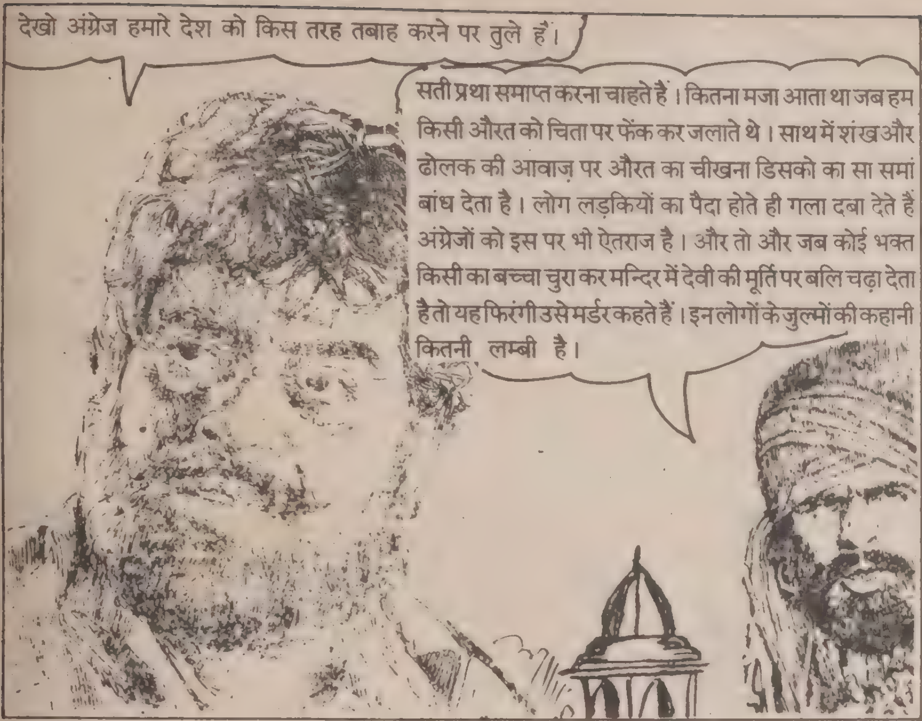
शेर गुनगुनाता गधा तो दफा हो गया। मगर मैं सोच रहा था जहां गधे भी शायरी कर लेते हों क्या वह देश कहीं पिछड़ा हुआ हो सकता हैं ?

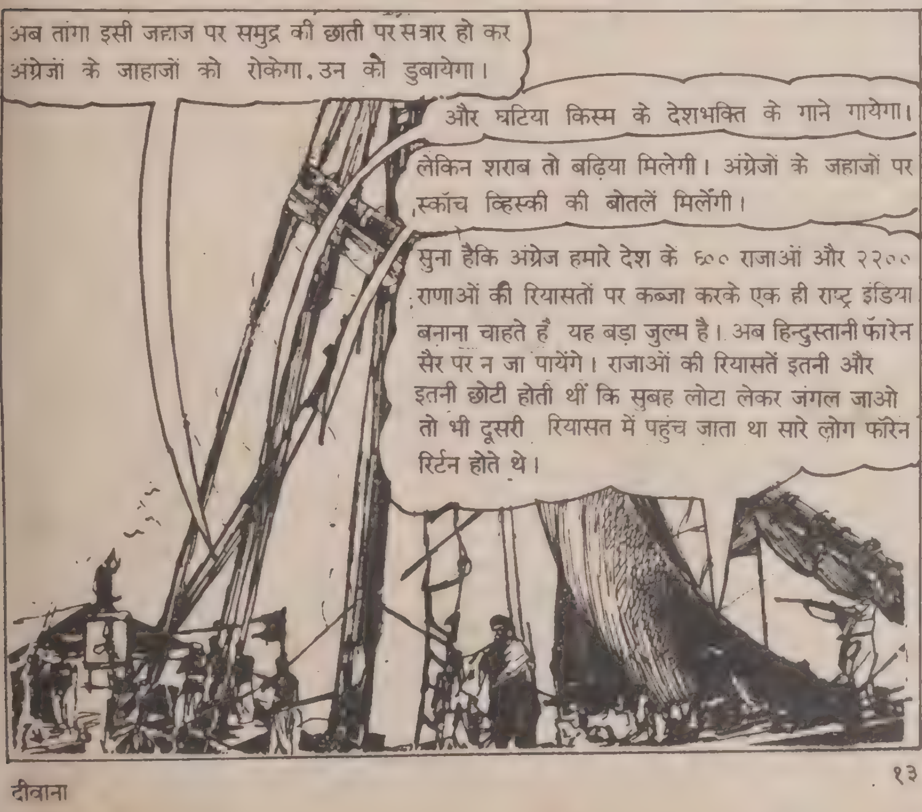

मनोजकुमार की एक और फिल्म जिसमें सस्ती बाज़ारछाप ,देशभक्ति को लंगूर छाप दंत मंजन या ताकत की दवाई की तरह आवाज़ लगा-लगा कर बेचा गया है। गाने गा-गा कर बेचा है।
*पात्र परिचय *शत्रुघ्न—आइसक्रीम खां *प्रेम चौपड़ा—शैम्पू *हेमामालिनी—मीनाक्षी
*मनोज—भर्ता *परवीन बॉबी—सुराही *मटन पूरी—शेर सिंह *दिलीपकुमार—तांगा
*शशिकपूर—सागटी
*पटकथा—सलीमा जावेदा
देशभक्ति की
क्रांति
BEAREK BONDS

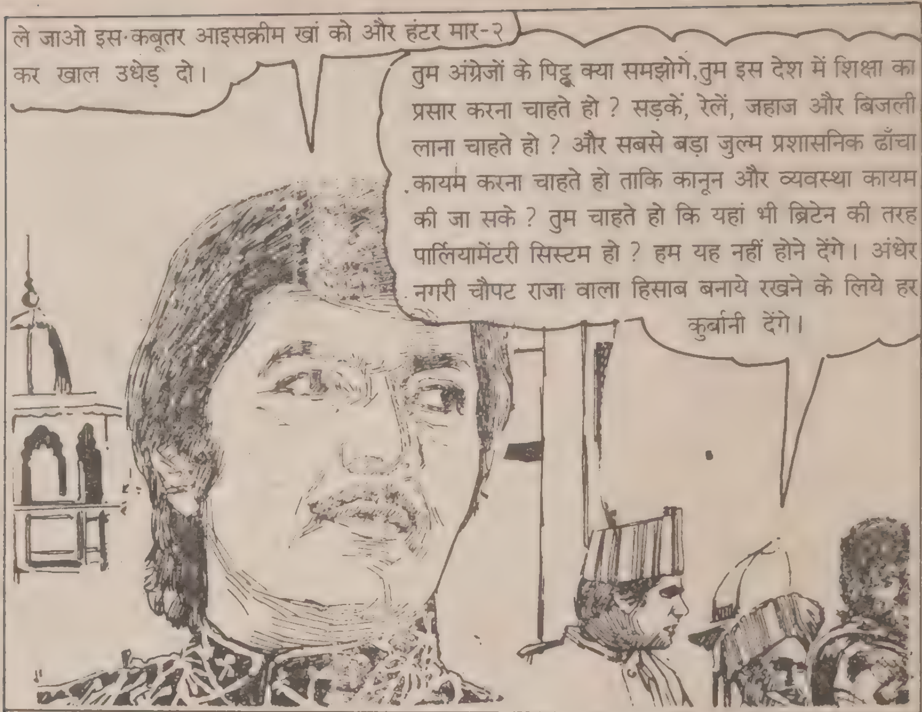

भीमा काका, वह देखो क्या है ? अंग्रेज जहाज में बारूद ला रहे हैं।
यह भी तो हो सकता है तांगा कि जहाज में सायरा के लिये जार्जेट और नायलोन की साड़ियां तथा सैंट वगैरह आ रहा हो। आफटर शेव लोशन व ब्लेड भी तो लाते हैं यह, जिसे हम तुम सब इस्तेमाल करते हैं। और यह न भूलो कि मनोजकुमार इस फिल्म के प्रीमियर पर जो कॉकटेल पार्टी देगा उसमें दस पेटियां जो स्कॉच व्हिस्की और शैम्पेन लगेगा वह भी तो इसी में है। बंबई के देश प्रेमी फिल्म स्टारों के लिए अटसन, टोयोटा और शेवरलेट मर्सीडीज कारें भी होंगी जिनके बिना उनका काम नहीं चल सकता।
पहले हम इन चीजों को उतार लेने देंगे बाद में जहाज में जब सिर्फ बारूद रह जायेगा तो कैमरा चालू कर देंगे।

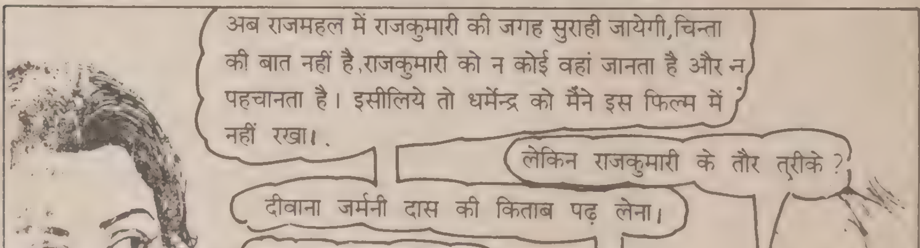

सिपाहियों, इन आदमियों में से छांट कर जवानों को अलग करो उनको काम पर लगाओ। बच्चों को पकड़ कर ले जाओ और स्कूलों में भर्ती करवा दो। ये लोग जाहिल हैं अपने बच्चों को डंगर चराने भेजते हैं और शिक्षा से बंचित रख देते हैं अगर इन्हें जबरदस्ती नहीं पढ़ाया गया तो ये लोग कभी हमसे आजादी की लड़ाई नहीं जीत सकेंगे और हम अंग्रेजों को यहीं रहना पड़ेगा और मच्छरों से लड़ना पड़ेगा। रात को माता के जागरण के भजन लाउडस्पीकरों पर सुनसुन कर बोर होना पड़ेगा। बूढ़ों को पकड़ कर चेम्सफोर्ड क्लब ले जाओ और रम्मी या ब्रिज खेलना सिखाओ। ये बूढ़े बेकार घर में पड़े-पड़े खाट तोड़ते रहते हैं। जब इनको कुछ नहीं सूझता तो ये बहुओं को जलाने का खेल खेलते हैं।

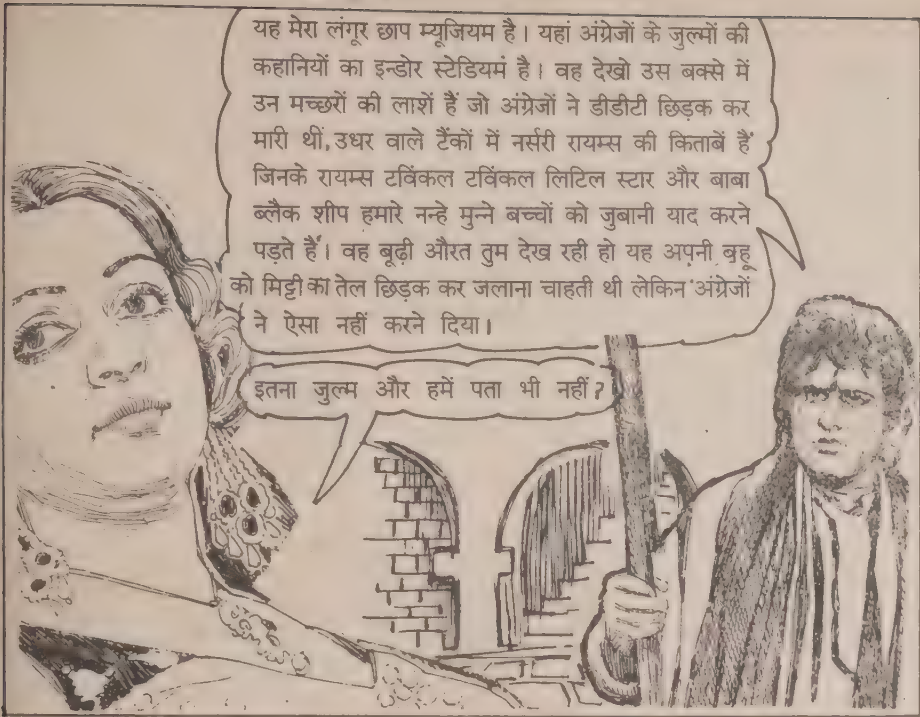

आजादी के लिये लड़ने के लिये बागी तो हर देश में पैदा होते हैं लेकिन ऐसे मूर्ख और जाहिल बागी दुनिया में कहीं नहीं होंगे। इन्होंने कहीं सुन लिया कि आजादी हासिल करने के लिये आग से खेलना पड़ता है बस बागियों ने गांव में आग लगा दी और उसमें दो टीमें बना कर हॉकी खेल रहे हैं, उस पर तुर्रा यह कि कहते हैं सर थामस को रेफ्री बनायेंगे। अब वह समय आ गया है जब अंग्रेजों को बागी तैयार करने का काम भी खुद करना पड़ेगा। बागी ट्रेनिंग सैंटर खोलना पड़ेगा।

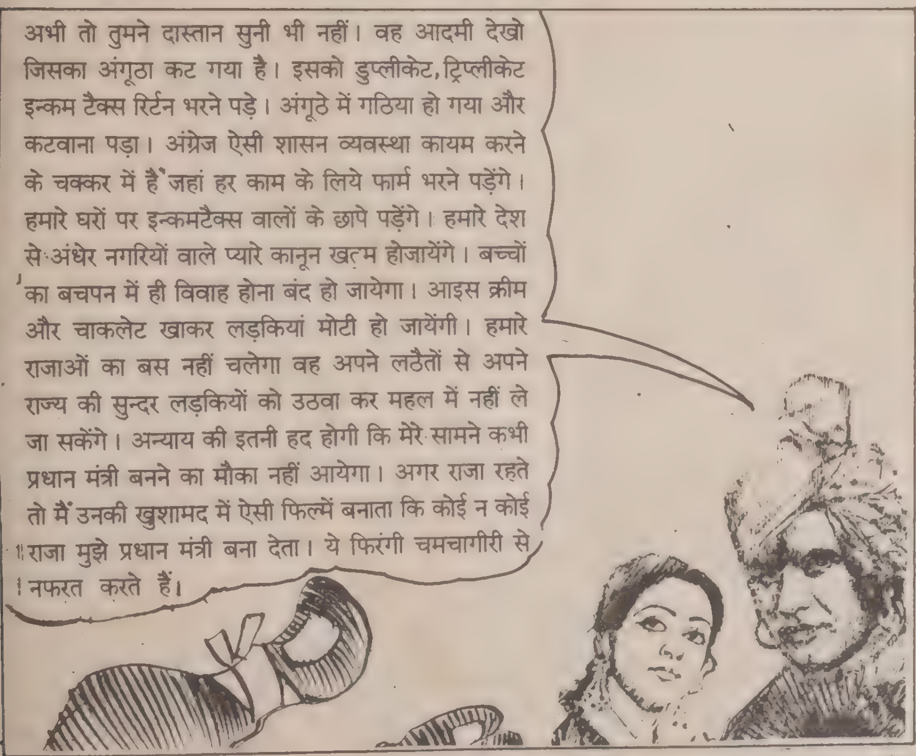

देखो अंग्रेज हमारे देश को किस तरह तबाह करने पर तुले हैं।
सती प्रथा समाप्त करना चाहते हैं। कितना मजा आता था जब हम किसी औरत को चिता पर फेंक कर जलाते थे। साथ में शंख और ढोलक की आवाज़ पर औरत का चीखना डिसको का सा समां बांध देता है। लोग लड़कियों का पैदा होते ही गला दबा देते हैं अंग्रेजों को इस पर भी ऐतराज है। और तो और जब कोई भक्त किसी का बच्चा चुरा कर मन्दिर में देवी की मूर्ति पर बलि चढ़ा देता है तो यह फिरंगी उसे मर्डर कहते हैं। इन लोगों के जुल्मों की कहानी कितनी लम्बी है।

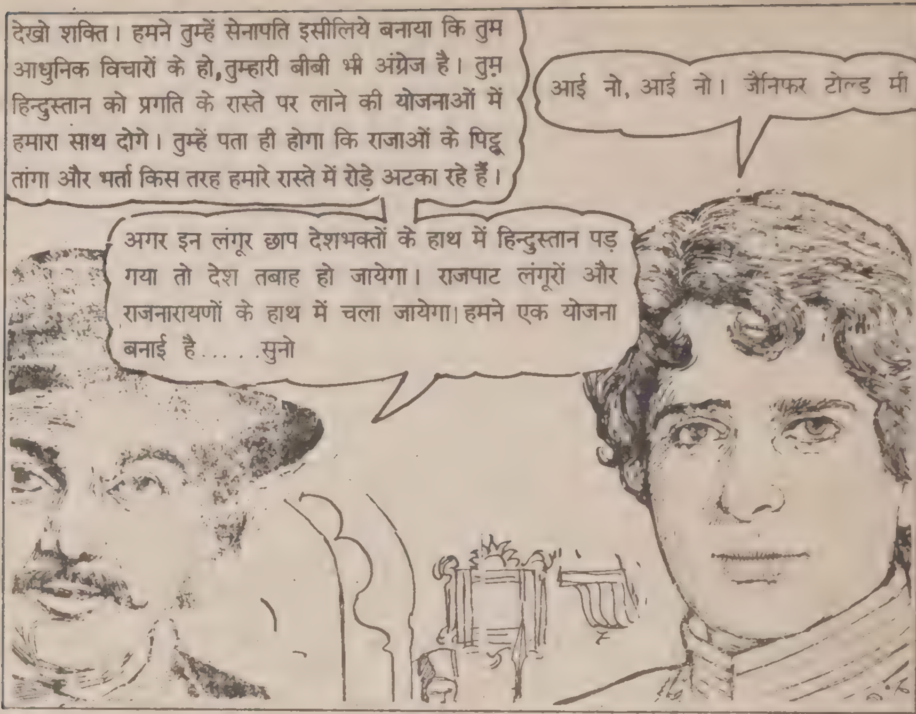

अब तांगा इसी जहाज पर समुद्र की छाती पर सवार हो कर अंग्रेजों के जाहाजों को रोकेगा, उन को डुबायेगा।
और घटिया किस्म के देशभक्ति के गाने गायेगा।
लेकिन शराब तो बढ़िया मिलेगी। अंग्रेजों के जहाजों पर स्कॉच व्हिस्की की बोतलें मिलेंगी।
सुना हैकि अंग्रेज हमारे देश के ६०० राजाओं और २२०० राणाओं की रियासतों पर कब्जा करके एक ही राष्ट्र इंडिया बनाना चाहते हैं यह बड़ा जुल्म है। अब हिन्दुस्तानी फॉरेन सैर पर न जा पायेंगे। राजाओं की रियासतें इतनी और इतनी छोटी होती थीं कि सुबह लोटा लेकर जंगल जाओ तो भी दूसरी रियासत में पहुंच जाता था सारे लोग फॉरेन रिर्टन होते थे।

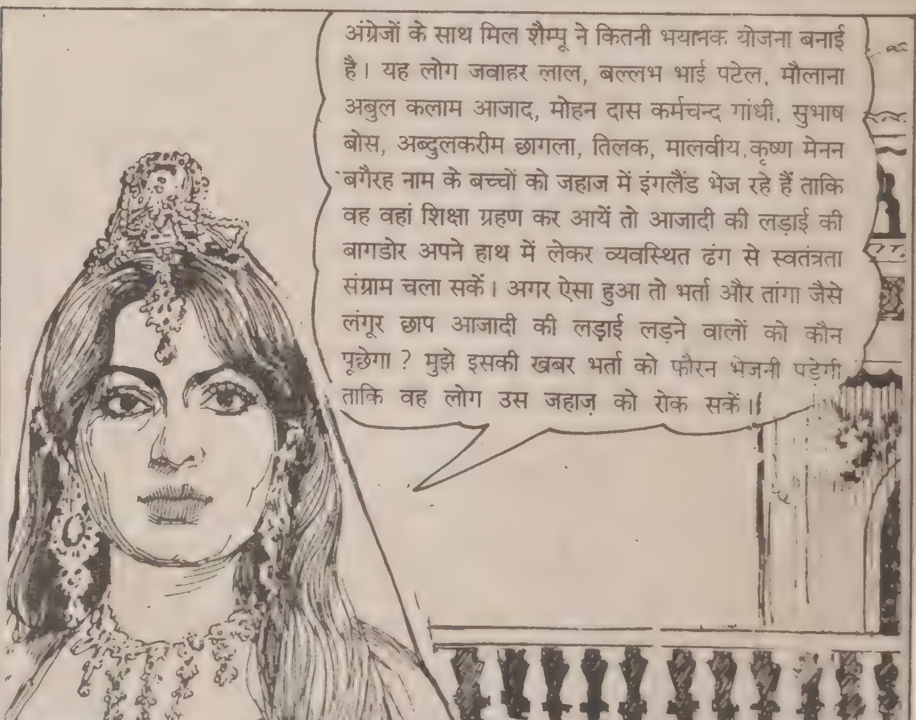

ले जाओ इस कबूतर आइसक्रीम खां को और हंटर मार-२ कर खाल उधेड़ दो।
तुम अंग्रेजों के पिट्ठू क्या समझोगे,तुम इस देश में शिक्षा का प्रसार करना चाहते हो ? सड़कें, रेलें, जहाज और बिजली लाना चाहते हो ? और सबसे बड़ा जुल्म प्रशासनिक ढाँचा कायम करना चाहते हो ताकि कानून और व्यवस्था कायम की जा सके ? तुम चाहते हो कि यहां भी ब्रिटेन की तरह पार्लियामेंटरी सिस्टम हो ? हम यह नहीं होने देंगे। अंधेर नगरी चौपट राजा वाला हिसाब बनाये रखने के लिये हर कुर्बानी देंगे।

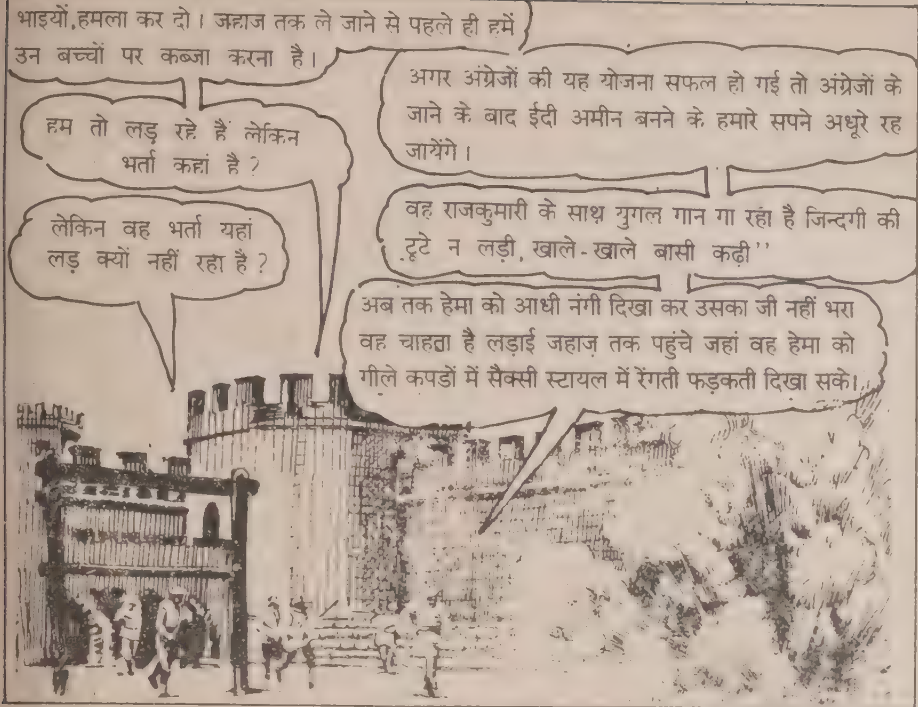

अब राजमहल में राजकुमारी की जगह सुराही जायेगी,चिन्ता की बात नहीं है,राजकुमारी को न कोई वहां जानता है और न पहचानता है। इसीलिये तो धर्मेन्द्र को मैंने इस फिल्म में नहीं रखा।
लेकिन राजकुमारी के तौर तरीके ?
दीवाना जर्मनी दास की किताब पढ़ लेना।
और मेरा क्या होगा ?
मैं आपको मनोज लंगूर छापे देश भक्ति म्यूजियम की सैर कराऊंगा। उतने ही पैसे लूंगा जितने आगरे के टूरिस्ट गाइड लेते हैं।

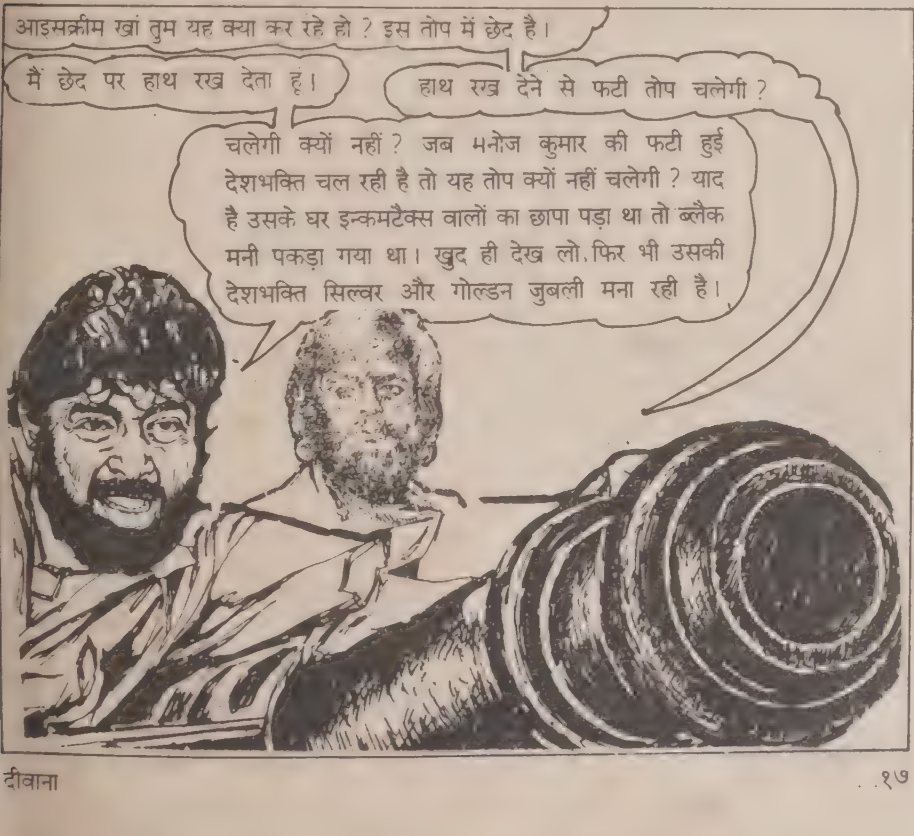

यह मेरा लंगूर छाप म्यूजियम है। यहां अंग्रेजों के जुल्मों की कहानियों का इन्डोर स्टेडियमं है। वह देखो उस बक्से में उन मच्छरों की लाशें हैं जो अंग्रेजों ने डीडीटी छिड़क कर मारी थीं, उधर वाले टैंकों में नर्सरी रायम्स की किताबें हैं जिनके रायम्स टविंकल टविंकल लिटिल स्टार और बाबा ब्लैक शीप हमारे नन्हे मुन्ने बच्चों को जुबानी याद करने पड़ते हैं। वह बूढ़ी औरत तुम देख रही हो यह अपनी बहू को मिट्टी का तेल छिड़क कर जलाना चाहती थी लेकिन अंग्रेजों ने ऐसा नहीं करने दिया।
इतना जुल्म और हमें पता भी नहीं?

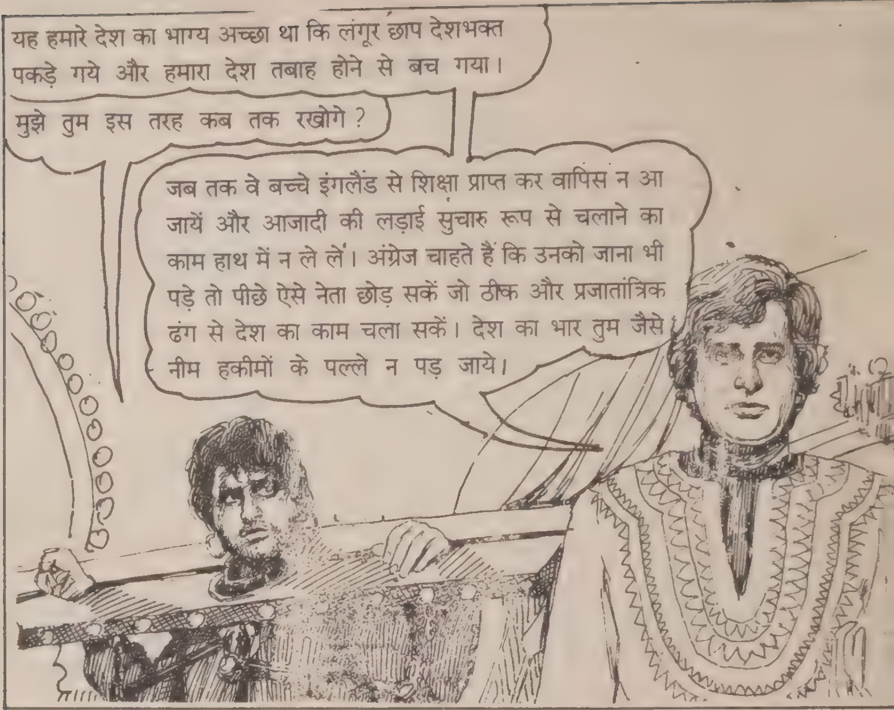

अभी तो तुमने दास्तान सुनी भी नहीं। वह आदमी देखो जिसका अंगूठा कट गया है। इसको डुप्लीकेट, ट्रिप्लीकेट इन्कम टैक्स रिर्टन भरने पड़े। अंगूठे में गठिया हो गया और कटवाना पड़ा। अंग्रेज ऐसी शासन व्यवस्था कायम करने के चक्कर में हैं जहां हर काम के लिये फार्म भरने पड़ेंगे। हमारे घरों पर इन्कमटैक्स वालों के छापे पड़ेंगे। हमारे देश से अंधेर नगरियों वाले प्यारे कानून खत्म होजायेंगे। बच्चों का बचपन में ही विवाह होना बंद हो जायेगा। आइस क्रीम और चाकलेट खाकर लड़कियां मोटी हो जायेंगी। हमारे राजाओं का बस नहीं चलेगा वह अपने लठैतों से अपने राज्य की सुन्दर लड़कियों को उठवा कर महल में नहीं ले जा सकेंगे। अन्याय की इतनी हद होगी कि मेरे सामने कभी प्रधान मंत्री बनने का मौका नहीं आयेगा। अगर राजा रहते तो मैं उनकी खुशामद में ऐसी फिल्में बनाता कि कोई न कोई राजा मुझे प्रधान मंत्री बना देता। ये फिरंगी चमचागीरी से नफरत करते हैं।


देखो शक्ति। हमने तुम्हें सेनापति इसीलिये बनाया कि तुम आधुनिक विचारों के हो, तुम्हारी बीबी भी अंग्रेज है। तुम हिन्दुस्तान को प्रगति के रास्ते पर लाने की योजनाओं में हमारा साथ दोगे। तुम्हें पता ही होगा कि राजाओं के पिट्ठू तांगा और भर्ता किस तरह हमारे रास्ते में रोड़े अटका रहे हैं।
आई नो, आई नो। जैनिफर टोल्ड मी
अगर इन लंगूर छाप देशभक्तों के हाथ में हिन्दुस्तान पड़ गया तो देश तबाह हो जायेगा। राजपाट लंगूरों और राजनारायणों के हाथ में चला जायेगा। हमने एक योजना बनाई है.....सुनो

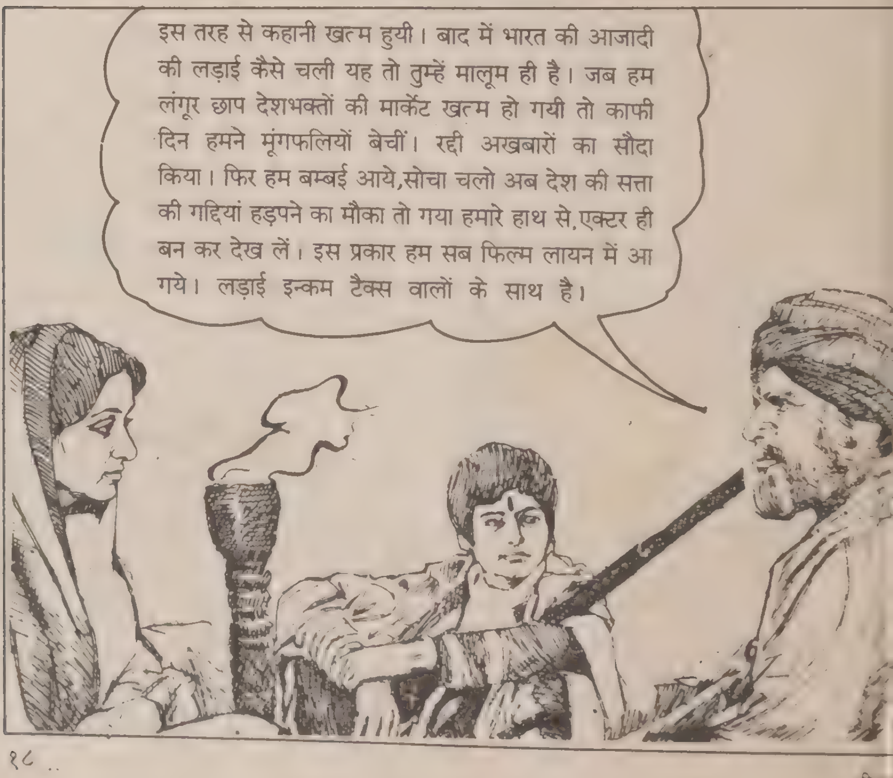

अंग्रेजों के साथ मिल शैम्पू ने कितनी भयानक योजना बनाई है। यह लोग जवाहर लाल, बल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, मोहन दास कर्मचन्द गांधी, सुभाष बोस, अब्दुलकरीम छागला, तिलक, मालवीय, कृष्ण मेनन वगैरह नाम के बच्चों को जहाज में इंगलैंड भेज रहे हैं ताकि वह वहां शिक्षा ग्रहण कर आयें तो आजादी की लड़ाई की बागडोर अपने हाथ में लेकर व्यवस्थित ढंग से स्वतंत्रता संग्राम चला सकें। अगर ऐसा हुआ तो भर्ता और तांगा जैसे लंगूर छाप आजादी की लड़ाई लड़ने वालों को कौन पूछेगा ? मुझे इसकी खबर भर्ता को फौरन भेजनी पड़ेगी ताकि वह लोग उस जहाज़ को रोक सकें।


भाइयों,हमला कर दो। जहाज तक ले जाने से पहले ही हमें उन बच्चों पर कब्जा करना है।
हम तो लड़ रहे हैं लेकिन भर्ता कहां है ?
अगर अंग्रेजों की यह योजना सफल हो गई तो अंग्रेजों के जाने के बाद ईदी अमीन बनने के हमारे सपने अधूरे रह जायेंगे।
लेकिन वह भर्ता यहां लड़ क्यों नहीं रहा है ?
वह राजकुमारी के साथ युगल गान गा रहा है जिन्दगी की टूटे न लड़ी, खाले-खाले बासी कढ़ी''
अब तक हेमा को आधी नंगी दिखा कर उसका जी नहीं भरा वह चाहता है लड़ाई जहाज़ तक पहुंचे जहां वह हेमा को गीले कपडों में सैक्सी स्टायल में रेंगती फड़कती दिखा सके।


आइसक्रीम खां तुम यह क्या कर रहे हो ? इस तोप में छेद है।
मैं छेद पर हाथ रख देता हूं।
हाथ रख देने से फटी तोप चलेगी ?
चलेगी क्यों नहीं ? जब मनोज कुमार की फटी हुई देशभक्ति चल रही है तो यह तोप क्यों नहीं चलेगी ? याद है उसके घर इन्कमटैक्स वालों का छापा पड़ा था तो ब्लैक मनी पकड़ा गया था। खुद ही देख लो.फिर भी उसकी देशभक्ति सिल्वर और गोल्डन जुबली मना रही है।



यह हमारे देश का भाग्य अच्छा था कि लंगूर छाप देशभक्त पकड़े गये और हमारा देश तबाह होने से बच गया।
मुझे तुम इस तरह कब तक रखोगे?
जब तक वे बच्चे इंगलैंड से शिक्षा प्राप्त कर वापिस न आ जायें और आजादी की लड़ाई सुचारु रूप से चलाने का काम हाथ में न ले लें। अंग्रेज चाहते हैं कि उनको जाना भी पड़े तो पीछे ऐसे नेता छोड़ सकें जो ठीक और प्रजातांत्रिक ढंग से देश का काम चला सकें। देश का भार तुम जैसे नीम हकीमों के पल्ले न पड़ जाये।



इस तरह से कहानी खत्म हुयी। बाद में भारत की आजादी की लड़ाई कैसे चली यह तो तुम्हें मालूम ही है। जब हम लंगूर छाप देशभक्तों की मार्केट खत्म हो गयी तो काफी दिन हमने मूंगफलियों बेचीं। रद्दी अखबारों का सौदा किया। फिर हम बम्बई आये,सोचा चलो अब देश की सत्ता की गद्दियां हड़पने का मौका तो गया हमारे हाथ से,एक्टर ही बन कर देख लें। इस प्रकार हम सब फिल्म लायन में आ गये। लड़ाई इन्कम टैक्स वालों के साथ है।

क्यों और कैसे

प्र० : क्या सारे बन्दर बराबर बुद्धिमान होते हैं?

मनोज औचलिया 'टोनी', उदयपुर।

उ० : एक समय था जब सारे ही बन्दरों को नकलची या 'एप' कहा जाता था। परन्तु अब एप शब्द केवल बिना पूंछ के वनमानुषों जो कि बहुत कुछ मनुष्य से मिलते हैं को दिया जाता है। ये वनमानुष अफ्रीका तथा एशिया के उत्कट जंगलों में पाये जाते हैं। इन वनमानुषों में विशाल गोरिल्ला, बड़ा चिम्पान्जी, बालों वाला ओरंगउटान तथा लम्बी बाँहों वाला गिब्बन शामिल हैं।

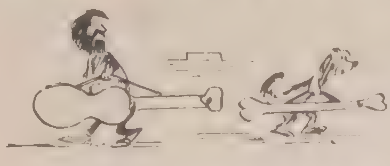
इस जानवर को वनमानुष या मानवाकार बन्दर कहते है क्योंकि ये कई प्रकार से मनुष्य से मिलते हैं। इनके शरीर का ढाँचा मनुष्य जैसा होता है तथा इनके दाँत मनुष्यों जितने ही तथा उसी आकृति के होते है इनका दिमाग भी मनुष्य के दिमाग की तरह गहरी धारियों वाला तथा वैसी ही सी व्यवस्था लिये होता है केवल यह मनुष्य के दिमाग से छोटा होता है। वनमानुषों के शरीर की क्रियायें बोलने को छोड़ कर मनुष्य जैसी ही होती हैं। इनके शरीर का रक्त भी मनुष्यों से मिलता जुलता है।

गोरिल्ला सबसे बड़ा वनमानुष है जो मनुष्य जितना ही ऊँचा होता है परन्तु इसका वज़न ज्यादा होता है तथा शारीरिक शक्ति बहुत अधिक होती है। गिब्बन सबसे छोटे होते हैं तथा वनमानुषों में सबसे कम मनुष्य से मिलते हैं।

चिम्पान्जी सबसे ज्यादा मनुष्यों से मिलता है। यह वनमानुष गौरिल्ला तथा औरंगुटान से छोटा होता है। इन दूसरे वनमानुषों से अधिक बुद्धिमान होता है तथा सिखाने से जल्दी ही सीख लेता है।

चिम्पान्जी का शरीर मनुष्य जैसा ही होता है सिर्फ इसके तेरह जोड़ पसली होती हैं जबकि मनुष्य के अधिकतर बारह जोड़ ही होती हैं।

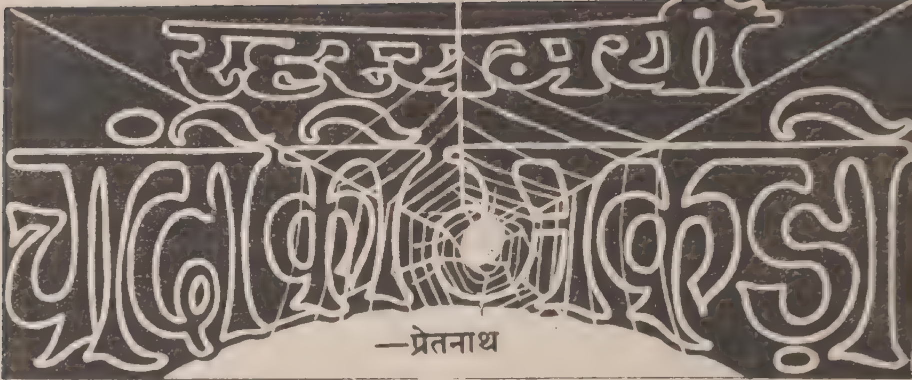
चिम्पान्जी की गुलाबी रंग की त्वचा हथेलियों और चेहरे के सिवाये काले मोटे बालों से ढकी रहती है। जैसे जैसे इस वनमानुष की आयु बढ़ती है सफेद बाल इसके चहरे पर दिखाई देने लगते हैं तथा त्वचा मटमैली या काली हो जाती है।



चिम्पान्जी आसानी से पकड़ लिये जाते हैं तथा स्वयं को चिड़ियाघर में रहने लायक कर लेते है। दुर्भाग्यवश मनुष्य के रोग भी इन्हें पकड़ लेते है। जैसे टी०बी० तथा कुछ चिम्पान्जी चिड़ियाघरों में कैंसर रोग के भी शिकार हो चुके हैं। चिम्पान्जी सामाजिक पशु है और शीघ्र ही मनुष्य की नकल करना सीख लेते है। कुछ तो चिड़ियाघर के अपने रखवालों से इतने हिल जाते हैं कि रोगी होने पर दूसरों से दवाई नहीं लेते और अपनी पसन्द के रखवाले के लिये रोते हैं।

वैज्ञानिकों ने लगभग बीस भिन्न आवाज़ें पहिचानी हैं जिन्हें वे 'चिम्पान्जी भाषा' कहते हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



—प्रेतनाथ

भाग —१

''देखो सावधान!'' श्याम नरायण चिल्लाया!

''ध्यान करो, बरखा सिंह!'' महिन्दर सिंह ने साथ दिया। बरखा सिंह ने सहसा ब्रेक लगाये और पीछे बैठे तीनों जासूस लड़के एक दम आगे गिरे। बड़ी गाड़ी तेज़ आवाज़ कर केवल एक इच से एक चमकती सुन्दर नीची गाड़ी से टकराने से बची।

कई व्यक्ति एकदम लिमोसिन गाड़ी से बाहर निकले। जैसे ही बरखा सिंह अपनी बड़ी कार से बाहर निकला उन्होंने उसे चारों ओर से घेर लिया और जोर-जोर से अजीब सी भाषा में बोलने लगे। बरखा सिंह ने उनकी परवाह न की और आगे बढ़ कर दूसरी कार के ड्राइवर के समीप जा कर कठोर आवाज़ में उसे डाँटा, ड्राईवर ने लाल वर्दी जिस पर सुनहरी काम किया हुआ था, पहन रखी थी।

''देखो मिस्टर तुमने रुकने के संकेत की ओर ध्यान नहीं दिया, तुम हम दोनों को ही चकनाचूर करदेते। ये बिल्कुल साफ तुम्हारी भूल थी क्योंकि रास्ते का हक मेरा था।''

''युवराज़ ज़ोरो, का सदा पहले जाने का हक होता है,'' दूसरे ड्राईवर ने गर्व पूवर्क कहा। ''दूसरों को उनका रास्ता नहीं रोकना चाहिये''।

अब तक राजू महिन्दर और श्याम सम्भल कर बाहर हुई घटना को अचम्भित से देखने लगे। लिमोसिन गाड़ी से निकले व्यक्ति लम्बे बरखा सिंह के चारों ओर नाच रहे थे। उनमें से एक, जो औरों से कुछ लम्बा था और ऊँचे पद पर प्रतीत होता था, हिन्दी में बोला, ''बेवकूफ़! तुम तो युवराज जोरो को मार ही डालते, और तुम एक अंतरराष्ट्रीय परेशानी उत्पन्न कर देते। तुम्हें तो सबक सिखाना चाहिये।''

मैं तो यातायात के नियमों का पालन कर रहा था, जब कि तुम उन पर नहीं चल रहे थे। बरखा सिंह अकड़ कर बोला। ये युवराज का क्या चक्कर है? महिन्दर ने श्याम से बाहर देखते हुए पूछा।

''क्या तुम समाचार पत्र नहीं पढ़ते?'' श्याम ने महिन्दर से पूछा। यह यूरोप के एक देश तरानिया से आया है। ये संसार के सबसे छोटे देशों में से एक है। ये भारत का दौरा, यहाँ के प्रसिद्ध स्थान देखते हुए करेगा।

'हद हो गई'। और हमारी उससे लगभग टक्कर ही हो गई होती।' महिन्दर बोला।

'बरखा सिंह सही था, चलो उतर कर उसकी हिम्मत बढ़ायें' राजू ने कहा।

वे तीनों कार से बाहर निकले, जैसे उन्होंने ऐसा किया, लिमोसिन का दरवा खुला। और श्याम से कुछ लम्बे क का एक लड़का बाहर निकला। उसके का

बाल यूरोपियन स्टाइल में लम्बे कटे हुए थे। हालाँकि वह इन लड़कों से एक दो साल ही बड़ा होगा फिर भी उतरते ही उसने एक दम स्थिति हाथ में ले ली।

'चुप रहो'। जैसे ही उसने ऐसा कहा, बरखा सिंह को घेरे सारे आदमी पत्थर की मूर्ति के समान चुप हो गये। उसने हाथ से इशारा किया और सब के सब उसके पीछे आ गये वह बरखा सिंह ड्राइवर की ओर बढ़ा।

'मै माफ़ी माँगना चाहता हूँ' उसने हिन्दी में कहा, 'मेरे ही ड्राईवर की भूल थी, मै इस बात का ध्यान रखूँगा की भविष्य में वह सड़क के नियमों का सही पालन करे'। "परन्तु अत्रभवन् ?" लम्बा आदमी शिकायत भरे स्वर में बोला। युवराज जोरो ने उसे हाथ के इशारे से चुप कर दिया। वह राजू महिन्दर और श्याम की ओर दिलचस्पी से देखने लगा। तीनों जासूस उनके निकट पहुँचे तो युवराज उन को सम्बोधित कर बोला, "ड्राईवर की भूल का मुझे खेद है, तुम्हारे ड्राईवर की होशियारी से एक बुरी दुर्घटना होने से बच गई, इसके लिये धन्यवाद। क्या इस शाही कार के तुम मालिक हो ?" और उसने बड़ी गाड़ी की ओर सिर हिलाया।

"नहीं मालिक तो नहीं कहना चाहिये," राजू बोला परन्तु हम अक्सर इस का प्रयोग करते है"। यह समय बड़ी गाड़ी के विषय में अधिक बातें करने तथा कैसे इसका प्रयोग राजू ने जीता था बताने का समय नहीं था।

तीनों जासूस लड़के राणादे से मिल कर वापिस लौट रहे थे। "मै जोरो मोन्टेसटान तरानिया का युवराज हूँ", लड़का बोला "वैसे मै अभी युवराज नहीं हूँ, मेरी ताजपोशी अगले महीने होने वाली है, परन्तु लोग मुझे युवराज कहे बिना नहीं रहते। क्या तुम भारतीय लड़के हो ?"

'श्याम और महिन्दर को पूर्ण भारतीय कहा जा सकता है इन दोनों का सरल और प्रेम भरा स्वभाव इसका प्रतीक है परन्तु चाहो तो मुझे इनसे अलग समझ सकते हो क्योंकि मै कभी-कभी बड़े लम्बे-लम्बे शब्द बोलता हूँ, तथा अपने मूड में सोचता रहता हूँ, जिसके कारण लोग मुझे सड़ियल स्वभाव का समझते हैं और कभी-कभी नापसन्द भी करते है, राजू ने उत्तर दिया। "परन्तु लगता है मै अपना स्वभाव बदल नहीं सकता।'

महिन्दर और श्याम एक दूसरे को देख कर मुस्कुरा रहे थे क्योंकि राजू जो कह रहा था ठीक था, परन्तु अब से पहले उन्होंने राजू को ये स्वयं मानते नहीं सुना था।

शेष पृष्ठ २४ पर,



सवाल यह है?


सवाल यह है?
तुम ने इस बात पर आह क्यों भरी कि तुम्हारे दो बेटे थे। क्या वे अब इस दुनिया में नहीं रहे?
जवाब हाज़िर है:
हैं तो इसी दुनिया में। पर उन में से एक की शादी हो गई और दूसरा कवि बन गया।
सवाल यह है?
ओफ़्फ़ो। तुम्हारे भुलक्कड़पने की हद हो गई। आफ़िस से कार पर आये हो और बाहर कार नहीं है। ज़रा दिमाग़ पर ज़ोर दो और सोच कर बताओ कि कार कहां है?
जवाब हाज़िर है?
अब याद आया मैं ने रास्ते में एक अजनबी को लिफ़्ट दी थी। पर उसे उतारने की बजाये घर के सामने आ कर मैं ने उस मे धन्यवाद कहा। और खुद कार से उतर गया। और वह कार ले कर चलता बना। अब मैं क्या बताऊं कि कार कहां है।
सवाल यह है?
तुम ने मुझे डूबने से बचाया। इसके लिये धन्यवाद मैं बड़ी खुशी से तुम्हें इनाम में पांच रुपये देता। पर क्या करुं मेरे पास दस का नोट है।
जवाब हाज़िर है:
कोई बात नहीं। दस ही दे दीजिये। एक बार फिर दरिया में गिर कर डूबिये। मैं बचा लूंगा और हिसाब बराबर हो जायेगा।

जो लाजवाब हैं?



कुछ और लाजवाब सवाल देखिये, आगामी अंक में

पृष्ठ २१ से आगे
क्योंकि राजू थोड़ा मोटा और तगड़ा दीखता था और बहुत चतुर था, लोग उसे ''चालाक मोटा'' भी कहते थे। उसके मित्र उसका आदर करते थे। उन्हें मालूम था किसी समस्या आ पड़ने पर राजू अवश्य उसका हल ढूंढ़ देगा।

अब राजू ने अपने जेब से ''तीन जासू-सों'' वाला कार्ड निकाला। कार्ड लिये बिना राजू कहीं भी जाता नहीं था। ''ये हमारे नाम हैं'', वह बोला ''मैं राजू माथुर हूँ, वह महिन्दर सिंह है और वह है श्याम नारायण !

बाहर से आये लड़के ने कार्ड लेकर गम्भीरतापूर्वक उसे देखा, ये तीन जासूसों का कार्ड था—

तीन जासूस
''हम हर गुत्थी सुलझाते हैं''

? ? ?

पहला जासूस — राजू माथुर
दूसरा जासूस — महिन्दर सिंह
रिकार्ड तथा खोज — श्याम नारायण

वे तीनों युवराज जोरो के प्रश्न की प्रतीक्षा में थे, 'कि प्रश्न चिह्न क्या है ? क्योंकि हर कार्ड देखने वाला यह प्रश्न पूछे बिना नहीं रहता था।

'ब्रोजास !' जोरो बोला, उसके मुख पर मुस्कान खेल रही थी सुन्दर दाँतों की पंक्ति दिखाई दे रही थी। 'तरानिया' की भाषा में इसका अर्थ है, ''बहुत बढ़िया''। मेरे विचार से प्रश्न चिह्न तुम्हारे काम का चिह्न है।

उन्होंने उसे आदर की दृष्टि से देखा क्योंकि उसने स्वयं ही प्रश्न चिह्नों का अर्थ निकाल लिया था। जोरो ने अपनी जेब में हाथ डाल कर कार्ड निकाला 'और राजू को पकड़ाया। ''और यह,'' वह बोला ''मेरा कार्ड है''।

महिन्दर और श्याम राजू के निकट खिसक कार्ड को देखने लगे। ये कार्ड बहुत सफ़ेद तथा करारा था और उस पर' बहुत बढ़िया अक्षरों में केवल जोरो मोन्टेसटान' लिखा था। नाम के ऊपर नीले और सुनहरी रंगों में एक प्रतीक छपा था। ये सोने के तारों के जाले में बैठी तलवार पकड़े एक मकड़ी प्रतीत होती थी परन्तु ये इतना घना था कि बिलकुल साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था।

'ये मेरा चिह्न है' लड़के ने गम्भीर स्वर में कहा ''एक मकड़ी'' अर्थात ये तरानिया के शासक परिवार का चिह्न है। ये बताने में कि हमने मकड़ी को कैसे अपना राष्ट्रीय चिह्न बनाया, काफ़ी समय लगेगा, परन्तु मैं तुम लोगों राजू महिन्दर श्याम से मिल कर बहुत



खुश हूँ। और जोरों ने आगे बढ़ कर तीनों लड़कों से हाथ मिलाये। ठीक इसी समय एक आदमी इन से आगे हो कर सामने आ गया। ये आदमी पतला तथा सुडौल नाक नक्श वाला था यह चतुर तथा खुशमिज़ाज प्रतीत होता था। ये लिमोसीन के पीछे रुकी एक काली कार में से उतर कर आया था। उसके बोलते ही पता चल गया कि यह भारतीय था।

''क्षमा कीजिये, श्रीमान'' वह बोला, परन्तु हमें अपने कार्यक्रम के लिये देर हो रही है। मुझे ख़ुशी है कि कोई दुर्घटना नहीं घटी, परन्तु यदि हमें आज सारा शहर घूमना है तो अब चलना चाहिये'।

'मुझे शहर घूमने में कोई विशेष रुचि नहीं है, मैंने बहुत से शहर देखे हैं। मुझे तो इन लड़कों से बात करने में दिलचस्पी है, क्योंकि ये पहले भारतीय हैं जिनसे मैंने बात की है।

''अच्छा बताओ, वह लड़कों से बोला, क्या ताजमहल बहुत सुन्दर है और देखने लायक है। मेरा ताज देखने का बहुत मन है ?''

लड़कों ने उसे आश्वासन दिया कि ताजमहल वाकई बहुत सुन्दर है और उसे देखे बिना नहीं जाना चाहिये। जोरो सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ।

''हर समय अंगरक्षकों से घिरे रहना बिलकुल भी आनन्दमय नहीं है', वह बोला डयूक स्टीफन जो मेरे अभिभावक तथा प्रतिशासक है और मेरी ताजपोशी होने की आयु होने तक तरानिया का कार्यभार सम्भालते हैं, ़का आदेश है कि किसी को मेरे निकट न आने दिया जाये क्योंकि इससे मेरे जुकाम खाँसी हो जाने का डर है।, कितनी फ़ज़ूल बात है, मैं कौन से ऐसे बड़े देश का राजा हूँ, जो मुझे कोई मारना चाहेगा। तरानिया के कोई दुश्मन नहीं है वास्तव में मेरा ऐसा कोई महत्व नहीं है।

वह एक क्षण रुका और फिर बोला, जैसे कुछ फैसला सा कर रहा हो। फिर उसने पूछा, 'क्या तुम लोग मेरे साथ ताज देखने चलोगे। कोई मुझे दिखाने वाला होगा, मुझे जीवन में पहली बार कुछ मित्र मिले हैं। साथ चलने के आमन्त्रण से तीनों लड़के काफ़ी अचम्भित हुए, परन्तु क्योंकि उस दिन उनका कोई ओर विशेष कार्यक्रम नहीं था वे सब जोरो के साथ जाने को तैयार हो गये।

राजू ने तुरन्त अपनी बड़ी गाड़ी में लगे फोन से अपने घर अपनी आँटी को फोन कर दिया। जोरो दिलचस्पी से देखता रहा। फिर सब लोग वहाँ खड़ी मार्गदर्शी गाड़ी में बैठ गये तथा युवराज जोरो तीनों लड़कों राजू महिन्दर श्याम और लम्बे आदमी के साथ अपनी कार में बैठ गये।

लिमोसिन में बैठते ही वह बोला डयूक स्टीफन को यह अच्छा नहीं लगेगा, उन्होंने कोई भी खतरा मोल लेने को मना किया था।



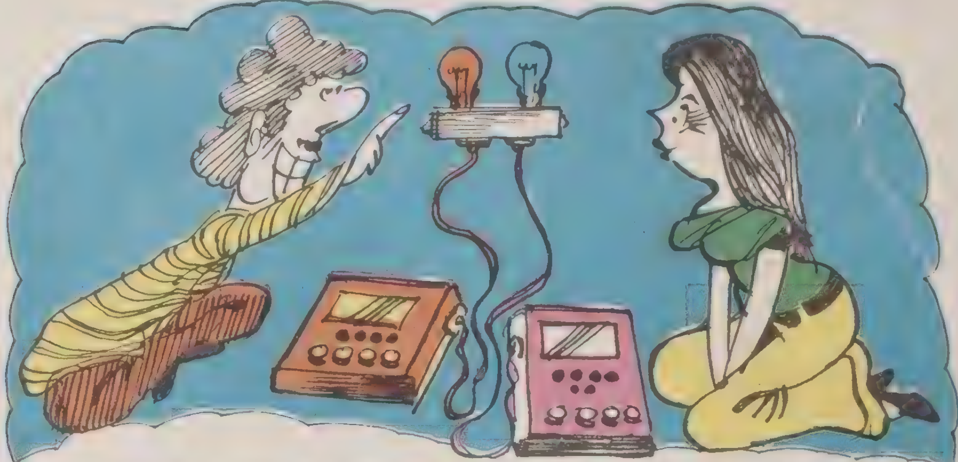
''इसमें कोई खतरा नहीं है डयूक रोजा, उसने सभ्यतापूर्वक उत्तर दिया।'' अब समय आ गया है कि डयूक स्टीफन मेरी इच्छाओं की कद्र करनी शुरू कर दें। दो माह में मै अपने देश का शासक हो जाऊँगा और मेरी इच्छा ही कानून होंगे, डयूक स्टीफन की नहीं चलेगी। अब मारको को आदेश दे दीजिये की यातायात के नियम भली भाँति पालन करे, यह तीसरी बार है कि हम भारी दुर्घटना का शिकार होने से बचे है, क्योंकि वह ऐसे ही कार चलाता है जैसे वह तरानिया में ही हो। इसके बाद ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहिये''।

क्रमशः

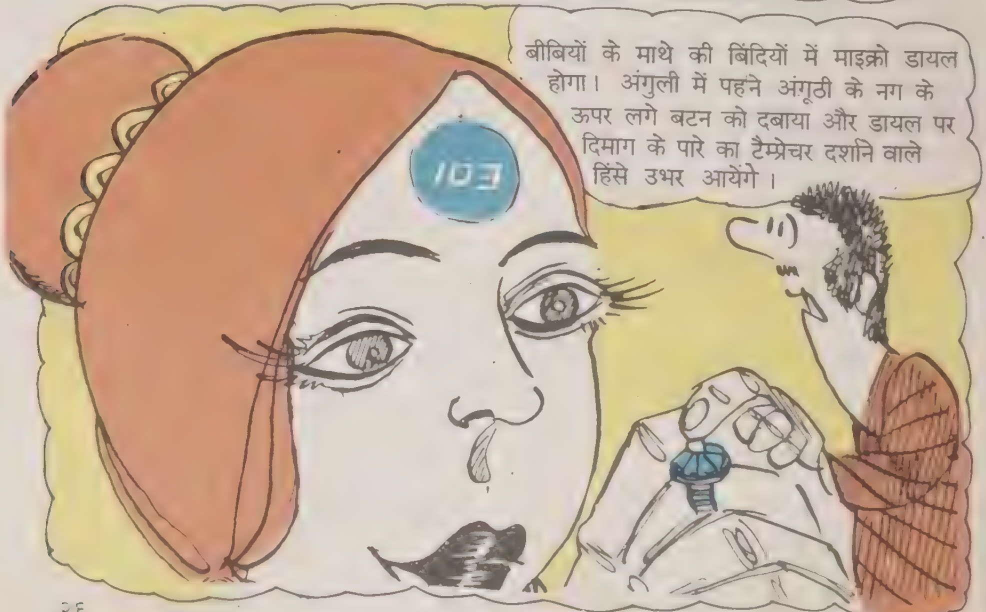
पुशबटन

फुलझड़ियां

जमाना वैज्ञानिक व तकनीकी साज़-सामान का है। हर क्षेत्र में कोशिश यही है कि सारे काम बटन दबाने भर से हों। धीरे धीरे पुशबटन का रोग इतना बढ़ सकता है कि

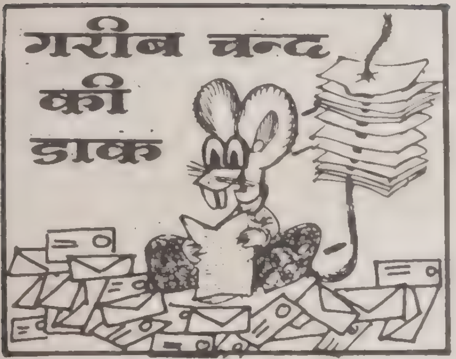


लड़का-लड़की की जन्म पत्रियां नहीं मिलानी पड़ेंगी। दोनों के बायोडाटा बैंकों को इन्डीकेटर से कनेक्ट कर दिया और बटन दबा दिया। फिर देखें हरी बत्ती जलती है या लाल)।




बीबी पूछेगी नहीं कि भूख लगी है या नहीं। वह पेट पर लगे इंडीकेटर का बटन दबा कर देखेगी। यह डायल वैसा ही होगा जैसा गाड़ियों में फ्यूल का होता है। एम्पटी, हाफ व फुल के चिन्हों समेत।
प्यार भी पुश बटन होगा। किसी पर अचानक दिल नहीं आयेगा। अपने दिल का प्लग लड़की की बांह पर बने सॉकेट में लगाया-स्विच ऑन किया और प्यार शुरू।
औरतें बेलन का प्रयोग नहीं करेंगी। पति के देर से घर आने पर वे इसी काम के लिए नाक पर बना बटन दबायेंगी। सिर पर बेलन की चोट के बराबर का विद्युत झटका लगेगा और गूमड़ उभर आयेगा।


मदहोश
अरे वह आसमान में क्या नज़र आ रहा है ? इतना तेज़ प्रकाश कि आंखें चुंधियां गयी हैं।
ओह ! ओह ! ! यह तो उड़न तश्तरी है। यहीं उतर रही है। किस ग्रह के वासी होंगे ये ?
मदहोश होश में आ.
मकड़ी तुझे उड़नतश्तरी नज़र आ रही है ? बेकार शोर मचा कर हम सबको इकट्ठा किया और हमारा टायम बर्बाद कर दिया।



राजेन्द्र तनेजा—नई दिल्ली : गरीब चन्द जी, एक लड़की मुझे देख कर हँसती है, बताइए मै क्या करूँ

उ० : पैंट और कमीज दोनों उल्टी पहन कर निकला करें फिर सारी लड़कियां हंसने लगेंगी।

राजेश कुमार शर्मा—देहरादून : डीयर गरीब चन्द जी, आप यह बताइये कि आप हमेशा अपनी पूंछ पर पत्रों का इतना भार क्यों लादे रखते हैं ?

उ० : पत्रों का उत्तर देने के बाद वही पत्र मेरे लंच के काम आते है। मै पूंछ में टांग उनका हम्बर्गर बनाता हूं।

कुमारी माया राय द्वारा श्री शिव सागर राय—धनबाद : प्रिय गरीब चन्द्र जी, कहीं आप लोगों की भेजी हुई आधी चिट्ठी चट तो नहीं कर जाते हैं ?

उ० : मै पूरी की पूरी चिट्ठियां चट कर जाता हूं। मुझ सफाई पसन्द है।

उमेश ज्ञानचंदानी 'प्रेमी'—बिलासपुर : डीयर, प्रेमी प्रेमिका क पीछे, नेता कुर्सी के पीछे भागता है। आप किसके पीछ भागत हैं ?

उ० : मै इन सबक कपड़ों के पीछ पड़ा रहता हूं।

बल बहादुर भुरंग—फिरोजपुर छावनी : अगर दुनिया की सभी औरतें दो मिनट क लिए खामोश हो जाएं ता ?

उ० : इसमें कई खतरे है। दो मिनट की खामोशी के बाद जैसे ही सारी औरतें एक साथ बोल पड़ेंगी ता झटका लग सकता है। पृथ्वी अपने कक्ष से हट सकती है।

अमर जीत सिंह—खुर्जा : गरीब चन्द जी क्या आपकी शादी हो गयी है ?

उ० : इस प्रश्न का उत्तर मैं बीबी से पूछ कर दूंगा।

जयचन्द —बेंगलूर : जब मैं दीवाना पढ़ता हूं तब मेरा पड़ोसी गुस्सा करता है। इस क लिये कोई तरीका बतायें उनसे गुस्सा न करन का ?

उ० : गुस्सा कमज़ोरी की निशानी है। आप अपने पड़ौसी को एक बार कुश्ती लड़ने का चैलेंज दे दें। कुश्ती के लिये वह खुराक खाकर मोटा हो जायेगा। जैसे-२ मोटा होता जायगा उसका गुस्सा कम होता जायेगा।

सुरेन्द्र खुराना, मोगा—(पंजाब) : डीयर गरीब चन्द जी, आपकी दृष्टि में धर्म-कर्म क्या है ?

उ० : बचपन में बिछुड़े दो जुडवां भाइयों की कहानी वाली फिल्म का टाइटिल।

पम्मी गोरखया—करनाल : जिन्दगी की रेलगाड़ी पटरी को कब छोड़ देती है।

उ० : जब आपका इंजन नैरोगेज का हो और ससुराल से डिब्बा मीटर गेज का आकर जुड़ जाये।

प्रेम बाबू शर्मा 'सुमन'—बगीची पीरजी : गरीब चन्द जी हम आप मिलकर एक 'नेता हाऊस' खोल लेते है जहां झूठ बोलने की ट्रैनिग दें, कैसा रहेगा ?

उ० : कुछ ही दिनों में वे हम दोनों में फूट डलवा देंगे और हम अलग-२ हो जायेंगे।

गरीबचन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली - ११०००२.



लल्लू आजकल दिन रात पढ़ने में लगा रहता है। क्या पढ़ता है ?
मैं किताब पढ़ रहा हूं ''लोकप्रिय कैसे बनें ?''
यार, तुझे तो पता है कि मैं टिड्डी से कितना प्यार करता हूं। उसके बिना मैं रह नहीं सकता। यह किताब पढ़ कर मैं इसमें लिखे फार्मूले आज़मा कर उसकेमम्मी डैडी को बस में करना चाहता हूं।
बात ठीक है,सबसे बड़ा वशीकरण मंत्र मीठे बोल हैं। मीठी जुबान से किसको बस में नहीं किया जा सकता ?
टिड्डी कीमम्मीसे मै मिश्री घुली जुबान से ऐसी-२ मीठी बातें करुंगा कि लगेगा कानों में से गुलाब जामुन की चाशनी उतर रही हो।
लल्लू क्या हुआ ?
तुम्हारे डैडी ने मुझे लात मार कर बाहर निकाल दिया। मुझे क्या मालूम था कि तुम्हारीमम्मी को शूगर की बीमारी है और मीठी चीजों का सख्त परहेज़ है उन्हें !


आदिम युग
यह तो तुमने बहुत अच्छा किया, रॉकदूत बाईक ले लिया।
बीस हार्सपावर की है। जिस ब्राइंटोसॉरस के घुटनों की गोल हड्डियों से इसके पहिये बने हैं वह बीस जंगली घोड़े खा चुका था।
अब मज़ा आयेगा, रोज तुम्हारे साथ रॉकदूत पर सैर करने चलूंगी। पहले बहुत बुरा लगता था, सभी जंगली सरदारों के लड़कों के पास बाइकें थी सिर्फ तुम्हारे पास नहीं थी।
मेरा रॉकदूत ऊपर वाले जंगल से नीचे वाले जंगल तक हिरण की बराबर स्पीड से पहुंच जाता है। मुझे रॉकदूत पर आते देख जंगली जानवर खुद ही सड़क से इधर-उधर हो जाते हैं। केवल एक दिक्कत है . . .
बच के ओये बाबू !
देना सोर ट्रक वाले आंख बंद कर गलत साइड पर चलते हैं। उनसे बचना पड़ता है।
आह !

भारत न्यूजीलैण्ड टैस्ट - श्रृंखला १९८१ के आंकड़े

खेल खेल में

भारत-बल्ले बाजी

नाम बल्लेबाज	टैस्ट	पारी	आऊट नहीं	रन	उच्चतम स्कोर	शतक	अर्द्ध शतक	कैच	औसत
डी०बी० वेंगसरकर	३	५	१	१७८	६१	—	२	६	४४.५०
एस०एम० पाटिल	३	५	—	१८६	६४	—	२	१	३७.२०
रोज़र बिन्नी	१	२	१	३७	२६	—	—	१	३७००
किरमानी	३	५	१	११२	७८	—	१	८	२८००
चेतन चौहान	३	५	—	१३९	७८	—	१	३	२७८०
गावस्कर	३	५	—	१२६	५३	—	१	१	२५२०
श्रीनिवासन	१	२	—	४८	२९	—	—	—	२४.००
यादव	१	२	—	४४	४३	—	—	—	२२.००
कीर्ति आजाद	१	२	—	३६	२०	—	—	—	१८००
घावरी	१	१	—	१७	१७	—	—	—	१७००
रवि शास्त्री	३	५	२	४८	१९	—	—	३	१६००
विश्वनाथ	३	५	—	६४	४६	—	—	२	१२.८०
कपिल देव	३	५	—	२७	१४	—	—	—	५४०
योगराजसिंह	१	२	—	१०	६	—	—	—	५००
दोषी	२	३	१	५	३	—	—	२	२.५०
यशपाल शर्मा	१	१	—	०	०	—	—	—	०.००
अतिरिक्त	—	—	—	११३	—	—	—	—	—
सब्स्टीट्यूट	—	—	—	—	—	—	—	४	—
योग	३३	५५	६	१९९०	७८	—	७	३२	२४.२८

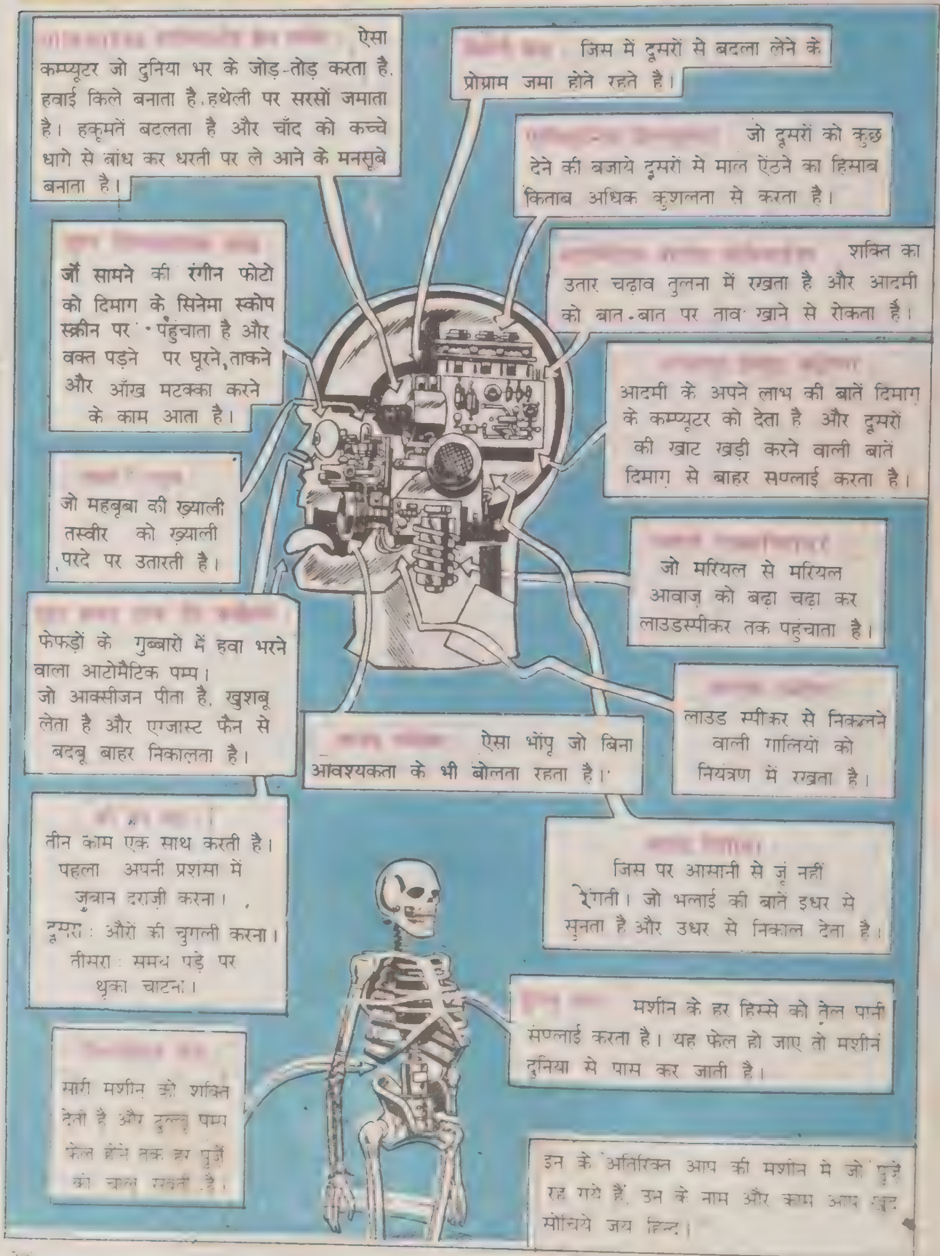
शतकः कोई नहीं। प्रत्येक मैदान का उच्चतक स्कोर ! **क्राइस्ट चर्च में चौहान द्वारा** ७८ रन। आकलैण्ड में किरमानी द्वारा ७८ रन। विलिंगटन में पाटिल द्वारा ६४ रन। **शतकीय विकेटों की साझेदारी** (२) क्राइस्ट चर्च में गावस्कर और चौहान की प्रथम विकेट की साझेदारी में ११४ रन। आकलैण्ड में किरमानी और यादव की नौवीं विकेट की साझेदारी में १०५ रन।

गेंदबाज का नाम	बौलिंग	मेडिन	रन	विकेट	अच्छा	५ विकेट १ पारी में	औसत
संदीप पाटिल	३३०	२२	७६	५	२-४०	—	१५२०
चेतन चौहान	४२	१	१६	१	१-४	—	१६००
रवि शर्मा	८८२	९१	२७७	१५	५-१२५	१	१८४६
रोजर बिन्नी	२०४	८	९३	३	२-२६	—	३१.००
कपिल देव	६३६	२९	२५५	८	४-३४	—	३१.८९
दिलीप दोषी	८२२	६९	१६४	५	२-१८	—	३२.८०
करसन घावरी	६०	४	३३	१	१-३३	—	३३.००
योगराज सिंह	९०	३	६३	१	१-६३	—	६३.००
शिवलाल यादव	२५२	१२	१११	१	१-९१	—	१११.००
कीर्ति आजाद	६	—	५	०	—	—	—
सुनील गावस्कर	१८	१	११	०	—	—	—
दिलीप वेंगसरकर	१२	१	३	०	—	—	—
अतिरिक्त	—	—	११५	—	—	—	—
योग	३३५५	१९७	१२२२	४०	५-१२५	१	३०.५५

दीवाने की दीवानगी

मनुष्य के शरीर के भागों को जीवविज्ञान में क्या क्या नाम दिये गये हैं और कौन सा भाग क्या काम करता है? इस पर बड़ी बड़ी पुस्तकें लिखी गई हैं। इस सम्बंध में ज़रा दीवानगी थ्योरी देखिये :

लीजिये, प्रस्तुत है, आज के इलैक्ट्रानिक युग में आप के शरीर के भागों के नये नाम और उन के नये काम :



यहां रोज उड़न तश्तरी उतरती है

मंगल ग्रह वासियों से हाथ मिलाने के इच्छुक यहां प्रतीक्षा करने की मूर्खता करें।

दीवाना


सिलबिल पिलपिल
मिस मलेरिया
इब क्या हो गया भई ? सोता क्यों नहीं ?
नींद कैसे आयेगी ? आजकल मच्छर इतने हो गये हैं कि चारपाई पर लेट कर शरीर पर इतने थप्पड़ मारने पड़ते हैं जितने अल्लारखा को द्रुतताल में निबद्ध रचना बजाते हुये तबले पर नहीं मारने पड़ते ।
आज सो जा कल देख लेंगे।
ऐह ! क्क्व कौन ?
पहचाना नहीं मुझे ? मेरा नाम मिस मलेरिया है।
मिस मलेरिया ? मैं तो तुम्हें नहीं जानता, क्या चाहिये मुझे तुमसे ?
कमाल है ! अभी पिछले महीने ही तो मैने तुम्हें काटा था। मैं एक मादा मच्छर हूं। मेरा नाम मिस मलेरिया है। तुम मर्द लोग कितने बेवफा होते हो, मै अपना विजिटिंग कार्ड भी छोड़ गयी थी पिछली बार।
?
तुम मुझसे कटने के बाद मलेरिया के शिकार हो गये थे और दो हफ्ते चारपाई तोड़ते रहे। हस्पताल में बर्फ़ की सिल्लियों पर लेट कर मेरे प्यार की ठंडी आंच सहते रहे। मुझे तो यह भी पता है कि इलाज पर तुम्हारे चार सौ रुपये खर्च हुये और तुमने अपने दफ्तर से छः सौ रुपये मैडिकल बिल के वसूल किये।



तो अब क्या चाहिये तुम्हें ? क्या तुम मुझे दोबारा काटना चाहती हो ?
नहीं, यह बात नहीं है। जब से तुम्हें काटा मुझे किसी और को काटने में आनन्द नहीं आता। लगता है मुझे तुमसे प्यार हो गया है। मैं तुम्हारे बिना जी नहीं सकती, जब भी तुम याद आते हो मेरे परों से पींऽऽऽऽ पींऽऽऽऽ
आवाज़ आने
दिल धड़कने लगता
मैंने अपने प्यार का
तुम्हारे खून से सींचा
तुम दो मेरे आस्तीन में छुपे कोबरा सांप हो।
एक मच्छरी का प्यार ! इसका दिमाग खराब तो नहीं हो गया। मच्छरी और आदमी में प्यार कैसे हो सकता है ? चाहे इसका प्यार सच्चा ही क्यों न हो
वैसे मिस मलेरिया देखने सुनने में अच्छी है। मैं सच बताऊं याड़ी इसे देख दिल मेरा कुचीपुड़ी कुचीपुड़ी करने लगा है।
लेकिन लोगों को क्या कहूंगा ? उन्हें कैसे मुंह दिखाऊंगा ?
तुम फिक्र न करो डार्लिंग। समाज क्या कर लेगा हमारा, पहले थोड़ा सा हंगामा होगा फिर सब ठीक हो जायेगा। कोई भी क्रांति कारी कदम उठाता है तो थोड़ी बहुत आलोचना तो होती ही है। मेरा बाप मच्छरों की ट्रेड यूनियन का लीडर है। सोच लो दहेज भी खूब मिलेगा।


लेकिन मैं अपने उन दो निखट्टू साथियों को कैसे समझाऊंगा ? कुछ अक्ल तो है नहीं उनमें। खी खी करना जानते हैं।
तुम उसकी भी चिन्ता न करो। तुम्हारे पास पैसा आयेगा तो उन दोनों की नज़रें नहीं उठेंगी। ज्यादा बड़बड़ करेंगे तो मैं उन्हें काट कर सीधे मैडिकल इंस्टीचूट पहुंचा दूंगी।
नि-- पड़ते।
मिस मलेरिया
आज क्या बात है सिलबिल बड़ी टेढ़ी-टेढ़ी चाल चल रहा है। सुबह की चाय सुड़कने इधर भी नहीं आ रहा है। सपने में इसे टीना मुनीम तो नहीं दिखाई दी जो इतना फूल रहा है।
आज तो कोई खास ही बात है इसका मुंह भूमध्य रेखा बन रहा है। याड़ी क्या बात है। तबीयत तो ठीक है ?
मैं शादी करने वाला हूं
खी खी खी खी ! मच्छरी से शादी करेगा ? आज तक हम इसकी बेवकूफियां बर्दाश्त करते रहे लेकिन आज तो हद ही हो गयी।
हम लोगों को सुनायेंगे तो कितनी हंसी उड़ेगी ! लेकिन हमारी बदनामी भी होगी लोग कहेंगे कि देखो इनके साथ कैसा धतूरे का बीज रहता है। हमें दिखा दे तू किस मच्छरी से शादी कर रहा है एक झापड़ मार कर उसका सुर्मा बना कर तेरी आंखों में डालूंगा।


मेरी होने वाली बीवी की इतनी बेइज्जती। कैसी भी हो वह आख़िर मेरी बीवी है। इन ख़रबूज़ों को इससे क्या मतबल वह कौन है?
मै तुम्हें खाऊंगा
तुम दो मेरे आस्तीन में छुपे कोबरा सांप हो।
डाक्टर साहब यह अजीब-अजीब बकने लगा था और अचानक हम दोनों पर हमला कर दिया। बड़ी मुश्किल से इस पर काबू पाकर हमने चारपाई के साथ रस्सियों से बांध दिया।
आप फिक्र न करें। लगता है रात को इसे मच्छर काट गया और इसे इन्सफलाइटिस हो गया है।
लेकिन वह तो मच्छर के काटने के आठ-दस दिन बाद होता है?
आप कहां रहते है साहब ! यह इंसटैंट का जमाना है। पहले काफी बनानी पड़ती थी अब इन्सटैंट कॉफी मिलती है। आज तो चाय भी इंसटैंट मिलती है। गर्म पानी में पाऊडर डालो चाय तैयार। इन्सटैंट फूडीफ्लेवर का नाम तो सुना होगा। मच्छर भी आधुनिक हो गये हैं। वह डंक में इन्सटैंट मलेरिया का डोज़ छोड़ने लगे हैं। इधर काटा और उधर मलेरिया तैयार। इसे किसी अल्ट्रामॉडर्न मच्छरी ने काटा है।
हुंह!


फैण्टम-जंगल शहर
लुआगा तुम्हें याद है तुमने मुझ से मन्ता कैसे छीनी थी !
छीनी ! तुम्हारा मतलब . . जब तुमने हमारे वैध चुनाव के खिलाफ बगावत की थी ?
जब 'मास्क वाला आदमी' तुम्हें मुखियाओं की कौंसिल के सामने न्याय के लिये लाया था।
मुखियाओं को चुनाव समझ नहीं आये थे इसलिये उन्होंने निर्णय दिया था।
जंगलों में बलवान की विजय होती है, उन्हें मरने तक लड़ने दो !
बाबाबू याद करो. मैंने वह युद्ध जीता था !
लुआगा . . .विजेता . . .जंगल का कानून . . .उसे मार दो !
अब मैं नये कानून मानता हूँ मुखियाओं, मैं निहत्थे आदमियों को नहीं मारता . . .
मैं . . .मैं पढ़ नहीं सकता (मुबकी)
फिर मेरे पीछे-पीछे बोलो . . .मैं, जनरल बाबाबू, अपनी फौजों को आदेश देता हूँ, कि वे हथियार डाल दें और
ये पढ़ कर देशवासियों को सुनाओ ! कहो तुम इस्तीफ़ा दे रहे हो . . .तथा विधान को समाप्त करते हो !
कुछ और बाबाबू ?
हाँ ! अपनी सेना को मेरा हुक्म मानने को कहो !
तुम्हारा विश्वास है कि मैं ये सब करूँगा। तुम तो उससे भी अधिक मूर्ख हो जितना मैंने समझा था !
हम देखते हैं, कौन मूर्ख है ! मुझे लोगों को बुलवाना आता है।
मैं लैमंडा लुआगा राष्ट्रपति पद . . त्यागता तथा हुक्म देता
इसे ठीक ऐसे ही पढ़ो, जैसे मैंने लिखा है।
छोड़ो, बाबाबू, तुम पढ़ना लिखना नहीं जानते !
प्रिंस अगोरडा तुम इस भविष्य के तानाशाह का साथ क्यों दे रहे हो ?
मुझे तुम्हारा प्रजातन्त्र पसन्द नहीं है लुआगा। वे सारे कानून तथा टैक्स . . .
अब हम महल पर पहुँच गये हैं, मैं बाहर निकल रहा हूँ, तुम्हें मालूम है क्या करना है !
हाँ, गुड लक !



रात्रि . . .बर्फ़ीले पहाड़ों में !
भाग्यवश आज चाँद नहीं चमक रहा . . .
अभी तक सब ठीक है भगवान करे हमें लुआगा जीवित मिल जायें।
मैं लैमेंडा लुआगा बगांताला के राष्ट्रपति पद को त्यागता हूँ तथा हुक्म देता हूँ . . .
यह राष्ट्र को पढ़ कर सुना दो, मैं तुम्हारा जीवन बख़्श दूँगा !
तुम झूठ बोल रहे हो बाबाबू ! मै तो यहाँ मारा ही जाऊँगा, चाहे मैं कुछ भी करूं।
तुम 'अब' इसे पढ़ोगे !
नहीं !
मैं तुम्हारा इरादा बदल सकता हूँ . . . 'जल्दी' !
CONT
इसे पढ़ो . . .इसे राष्ट्र को सुनाओ !
लुआगा कृपया ऐसा ही करो !
मैं लैमेंडा लुआगा बंगाला के राष्ट्रपति पद को त्यागता हूँ तथा जनरल बाबाबू को नामजद . . .
नहीं ! अपने और तुम्हारे जीवन के लिये नहीं !
जनरल, मेरे महल में मारपीट नहीं होगी !
प्रिंस डरपोक न बनो ! इस सब के पीछे बैंक का तुम्हारा धन है।
आशा है मैं लुआगा का जीवन बचाने ठीक समय पर पहुँच जाऊँगा !
मेजर ! कर्मीज भी . . .
ठीक श्रीमान्
जनरल तुमने कहा था मैं यह कर सकता हूँ !
मैंने इरादा बदल दिया, मैं स्वयं ही करूँगा।
आखिरी मौका लुआगा। क्या तुम मेरे हक में त्यागपत्र दे दोगे ?
कभी नहीं, बाबाबू !

चित्र
वर्ग पहेली

10रु. इनाम

अन्तिम तिथि १३ जून १६८१

शनिवार को यात्रा अशुभ होती है मंगलवार को गृहप्रवेश ठीक नहीं होता। शुक्रवार को नया कार्यहित कर नहीं। कृषि के लिये कौन सा वार अशुभ है?



ह ग दा ब र

व श ि े स ा व ी

ा ज र ी क र ु ा ग

न र प य ा ध त

ज ल अ ख्र ‍ न द ी ा

उत्तर

अंक ७ में प्रकाशित शीर्षक प्रतियोगिता का शीर्षक

खबर है सुनो बिल्ली रानी
आज यहां से चूहों की टोली है जानी

विजेता : रमा आनन्द, एल-७९ मालविया नगर, नई दिल्ली-११००१९.

घसीटा राम के ख़्याली

अड़ंगे

पिछले दिनों घसीटा राम के घर एक अजनबी आया, जिस ने बातचीत की ग़लत फ़हमी से घसीटा राम को मशहूर स्मगलर हाजी राम समझ लिया। अजनबी ने अपना नाम गुल अली गुल्फ़ाम बताया और कहा कि वह बग़दाद से आया है और बग़दाद से नसीर ख़ां—बसीर खां ने तुम्हारे लिये पांच लाख रुपये का सोना भेजा है। मेरे साथ बम्बई चलो और सोना ले लो। घसीटा राम जानता था कि गुल अली गुलफ़ाम आदमी पहचानने में भूल कर रहा है। पर पांच लाख रुपये के सोने के लालच में वह वास्तव में हाजी राम बन गया और अपने साथी जूडो मास्टर को जूडो गुलाम बना कर बम्बई चलने के लिये तैयार हो गया।

उस समय घसीटाराम और जूडो मास्टर के सामने मेज़ पर दो पिस्तौलें रखी थीं. वह पिस्तौलें उन्होंने अपनी जेबों में डालीं और गुल अली गुलफ़ाम को साथ ले कर एयरपोर्ट पहुंचे और बम्बई के लिये रवाना हो गये।

जहाज़ जब उड़ान भर कर अपनी मंजिल की ओर बढ़ा तो गुल अली गुल्फ़ाम ने घसीटा राम और जूडो मास्टर से पिस्तौलें लीं और उन्हें बताया कि वह जहाज़ का अपहरण कर रहा है। उसने घसीटा राम और जूडो मास्टर को जान से मार देने की धमकी दी। और उन्हें भी अपने साथ मिला लिया। इस के साथ उस ने जहाज़ के यात्रियों को सम्बोधित करते हुये कहा। किसी ने भी गड़बड़ की तो उसे गोली से उड़ा दिया जाएगा। मेरे यह साथी, हाजी राम और जूडो गुलाम तुम्हारी निगरानी करेंगे। इन के पास हथगोले और दूसरे बड़े बम हैं। किसी ने कोई चालाकी की तो बमों से जहाज़ की धज्जियां उड़ा दी जाएंगी।

काकपिट में पहुंच कर उस ने जहाज़ के दो पायलटों पर पिस्तौलें तानीं और उन्हें भी यही धमकी दी कि जहाज़ को उसकी मर्जी के मुताबिक न ले जाया गया तो वह उन्हें गोली मार देगा। पायलट ने कंट्रोल रूम को सूचना दी। कंट्रोल रूम ने उच्च अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित किया। और जहाज़ को अपहरणकर्ताओं से मुक्त कराने के लिये लेनदेन की बात शुरू हो गई। जहाज़ हाईजैक करने वालों की मांग थी कि उनका एक साथी जेल में है, उसे छोड़ दिया जाए और इसके साथ ही उन्हें पांच लाख रुपये दिये जायें।

जहाज पर टी०वी० कैमरे लगे थे जिन्होंने नीचे वालों के लिये जहाज़ के अन्दर का आँखों देखा हाल दिखाना शुरू कर दिया था। लीजिये. . .अब आगे की रनिंग कमेंट्री आप भी देखिये।




जहाज़ के काकपिट में।
वह बम्बई की सैंट्रल जेल में है। और उसका नाम है, दोरंगा चिल्ला।
दोरंगा चिल्ला! वह तो बहुत ख़तरनाक गुंडा है। कई बच्चों का अपहरण कर के उन की हत्या कर चुका है।
हम उसे किसी क़ीमत पर नहीं छोड़ सकते।
कीमत कौन बेवकूफ़ दे रहा है? मैं तो उल्टा उसे छुड़ाने की क़ीमत तुम से मांग रहा हूं। पांच लाख रुपये।
तुम्हारा क्या ख़्याल है। यह पांच लाख रुपये वह हमें देने के लिये मांग रहा है ना?
पांच लाख रुपये क्या वह तुम्हें पांच गंडेरिया भी दे दे तो ग़नीमत है। अब तक जो वह फ़्राड कर रहा है, वह दिखाई नहीं दे रहा है तुम्हें?


कह रहे थे पांच लाख का सोना ले कर मुफ़्त में डकार जाऊंगा। अपनी जिस अक्ल पर तुम्हें नाज़ था उस पर पत्थर पड़ गये हैं! अब पांच सौ जूते खाओगे तो भी डकार एक नहीं आयेगी।
तेरा पांच सौ रुपये का हिस्सा मरता नज़र आ रहा है, इसलिये बड़बड़ा रहा है तू। अरे मुझ से पूछ, मेरे दिल पर क्या गुज़र रही है।
मैं लाखों रुपये से मल्टीस्टार फ़िल्म बनाने वाला हूं। अमिताभ बच्चन, शशिकपूर, रेखा और राखी को फ़िल्म के लिये साईन करने वाला हूं। अगर अब मेरे हाथ पांच लाख रुपया न आया तो मेरी तो लुटिया ही डूब जायेगी।
नहीं नहीं। तू ग़लत कह रहा है करेले की दुम। तू बीस साल जंगली बन्दरों में रहा है। इस लिये तेरी शक्ल और अक़ल दोनों का दीवाला निकला हुआ है। गुल अली गुल्फ़ाम भाई मेरे ही लिये पांच लाख रुपया मांग रहा है।
अब तक जहाज़ बम्बई पहुंच गया था।
हवाई अड्डे पर उतरने के बाद उसे रन वे से अलग एक तरफ़ खड़ा कर दिया गया।



अब बोलो मेरे साथी दोरंगा चिल्ला को छोड़ रहे हो या नहीं ?
हम पांच लाख रुपया तो दे सकते है, पर उस हत्यारे को नहीं छोड़ सकते।
मैं पांच लाख रुपये तो छोड़ सकता हूं, पर अपने प्यारे को जेल से निकलवा कर रहूंगा। अब यह मेरी आख़री शर्त है।
चाहे मुझे एक पैसा न दो, पर दोरंगा चिल्ला को छोड़ दो।
चाहे एक भी पैसा मत दो !
मतलब है रुपया पाने की आख़री उम्मीद भी गई !
दिमाग़ ख़राब हुआ है इसका ! अरे इस से कहो उस छः रंगे अचार को मारे गोली और पैसे की बात करे।
तुम्हारी आख़री शर्त पर विचार किया जा रहा है। अब तुम बीमार यात्रियों को तो जहाज़ से उतरने दो !
ज़रूर उतरने देंगे। हम जहाज़ हाईजैक करने वालों की वही शराफ़त दिखायेंगे जो दूसरे हाईजैकर दिखाते आये हैं।
लीजिये, बीमार यात्रियों के साथ साथ हम जहाज़ पर सवार सभी औरतों और बच्चों को भी रिहा कर रहे हैं।
धन्यवाद। हम तुम्हारे इस फ़ैसले की दाद देते हैं।



चलिये, बच्चे, महिलायें और बीमार यात्री जहाज़ से नीचे उतर जायें।
वह पांच लाख वाली बात।
उसको गोली मारो, नहीं तो मैं तुम्हें गोली मार दूंगा।
इस प्रकार जहाज के साथ सीढ़ी लगाई गई, दरवाजा खोला गया, और एक एक करके महिलायें, बच्चे और बीमार यात्री नीचे उतरने लगे।
ठीक है ठीक है। बीमार और बच्चों के साथ केवल महिलाओं को जहाज़ से नीचे उतरने की इजाज़त है।
गुल अली गुलफ़ाम, एक एक कर के महिलाओं के उतरने से जहाज़ खाली होता जा रहा है।
हम क्या कर सकते हैं? हम महिलाओं बच्चों और बीमारों को उतारने का वचन दे चुके है।
गुल अली के गुलक़न्द ! जहाज़ ख़ाली हो गया। अन्दर कोई नहीं बचा। सब उतर गये। जहाज़ में केवल दो पुरुष थे और दोनों बीमार थे। चार बच्चे थे और बाकी सभी महिलायें थीं।
सभी महिलायें थीं? और दो पायलट??
वे दोनों भी महिला पायलट थीं।
लुट गये। सब बंटाढार हो गया। मेरे सारे किये धरे पर पानी फिर गया।


इसी लिये तो कह रहा था, पहले पांच लाख की बात सिरे चढ़ जाये तो अच्छा है।
कोई बात नहीं अब चढ़ जायेगी। यह वह जादू है, जो सर चढ़ कर बोलेगा। वे सभी औरतें थीं, पर तुम तो औरत नहीं हो। अब मैं तुम दोनों को बंदी बनाता हूं। मेरी शर्तें न मानी गईं तो मैं तुम दोनों को गोली से उड़ा दूंगा।
?
हैलो कंट्रोल रूम ! जहाज़ पर दो आदमी बचे हैं। मैंने इन्हें कैदी बना लिया है। इन्हें बचाने के लिये तुम्हें मेरी शर्तें माननी होंगी।
पर यह तो तुम्हारे साथी हैं। तुम ने कहा था, इन के पास हथगोले और बड़े बम हैं।
यह मेरे साथी नहीं हैं। मैं अकेला हाईजैकर हूं। इनके पास कुछ नहीं है। इन के पास बम तो क्या बेर की गुठलियां तक नहीं हैं। पर मेरे पास पिस्तौलें हैं, जिन से मैं इन्हें भून कर रख दूंगा।
क्या भून कर रख दोगे ! इतनी देर से बड़बड़ किये जा रहे हो और हम चुप हैं। इन पिस्तौलों में गोलियां नहीं हैं। रंगीन पानी है।
क्या बकवास कर रहे हो ! लगता है तुम्हारी मौत आई है। मै एक को मार कर दूसरे बंदी से भी अपनी शर्तें मनवा लूंगा।
ऐ . . .यह लो।
अरे इस में तो वाक़ई पानी है !
?
दूसरी में भी पानी है। क्यों मेरी आँखें फोड़ रहे हो !
?
यह पिस्तौलें असली नहीं हैं। पिचकारियां हैं। प्लास्टिक की बनी हुई।


प्लास्टिक की नकली पिस्तौलें! बिल्कुल असली जैसी!! इसीलिये एयरपोर्ट पर मैटल डिटैक्टर से डिटैक्ट नहीं हुईं!!!
होली खेलने के बाद यह पिचकारियों के साथ हमारी मेज़ पर पड़ी थीं। हम ने अपनी जेबों में डाल दिया तो शायद तुम ने इन्हें असली पिस्तौलें समझ कर यह षड्यंत्र रचा।
हैलो कंट्रोल रूम। हम ने हाईजैकर को पकड़ लिया है। आप इसे गिरफ़्तार कर लीजिये।
हम ने सब बातें सुन ली हैं। उसे काबू में रखिये हम पुलिस भेज रहे हैं।
गिरफ़्तार कर लो इन तीनों को
हमारा कोई कसूर नहीं है। यह खुद कह चुका है कि हम इसके साथी नहीं हैं।
हम दोनों की टिकटें हमारे पास एक साथ है। इसकी टिकट इसके पास है। यह हमारा साथी नहीं है।
पर यह पिस्तौलें इन्हें तुम ने दी हैं।
पर यह नक़ली हैं।
पर काम इन से असली पिस्तौलों का लिया गया है, और तुम आख़िरी वक़्त तक ख़ामोश रहे। बताओ! किस लालच में? वह पांच लाख वाली बात क्या है?
किसी लालच में नहीं साहब, मेरे पांच लाख साबत जूते मारो, जो मैने कभी एक टूटी चप्पल का भी लालच किया हो।

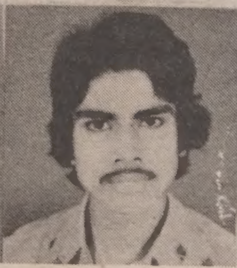

अरे क्या हो गया घसीटा राम ?
सच कह रहा हूं साहब. मैंने कभी एक गले टिमाटर और सड़े अंडे का भी लालच नहीं किया !
खटिया से गिर कर सपने में क्या बड़बड़ा रहा है ? ?
होली खेल कर यह पिस्तौल जैसी पिचकारियां अब तक यहां रखी हैं।
क्या कहा, पिस्तौल ? कैसी पिस्तौल ? ?
मेरी तौबा । मेरे बाप की तौबा । जो मैं कभी बीस साल तक भी किसी पिस्तौल के हाथ लगाऊं।
क्या हो गया है इसे ? दूसरों की खाट खड़ी करने वाला अपनी खाट से गिरा और खड़ा हो कर भाग लिया।
लगता है इसे
क्या बात करते हो !
भर के खटमल
डकार तक
हां मुफ्त
कर डकार
का इसे बीस
तजुर्बा है।

अंक में देखिये

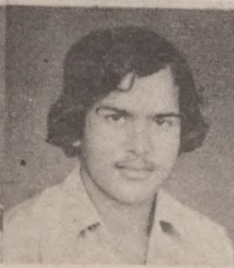
दीवाना फ्रैंड्स क्लब



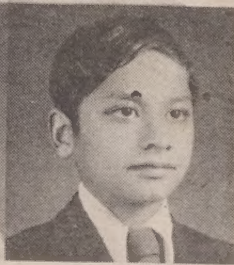
सुरिन्दर "मदान, कृष्णा सोप फैक्टरी लाडवा, २० वर्ष, हिजड़ों का तमाशा देखना।



मांगेराम अग्रवाल, पो० लरवाली व्हाया बाहनी डीह, जिला बिलासपुर (म०प्र०), १८ वर्ष, पत्र मित्रता।



राजेश बैताला, नया बाजार (भागलपुर), १७ वर्ष, क्रिकेट।



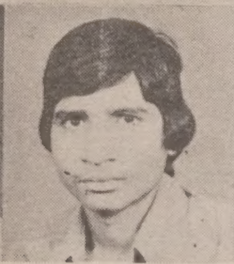
संजय कौशल, प्लाट नं: २२३ आनासागर रसखयूवर रोड़, अजमेर १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना।



किशोर कुमार, सूपर सलेक्शन हाउस गोल बाजार बिलास पुर, (म०प्र०), १८ वर्ष पेन्टिंग करना।



टी आर कुमार, ४९, छोटी होली खुरजा - २०३१३१ (उ०प्र०), १७ वर्ष, रेडियो सुनना।



कन्हैयालाल पाटनेचा, साउण्ड सर्विस सोमनाथ मन्दिर पाली, (राज०) २० वर्ष, नये आविष्कार करना।



नन्द किशोर शर्मा, ६४१ अलंगंज लोदी कालोनी दिल्ली - ११०००३, १९ वर्ष, क्रिकेट खेलना।



संजीव कुमार पाण्डेय, कोहडा, पो० मिरजान हाट भागलपुर - बिहार, १२ वर्ष क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना



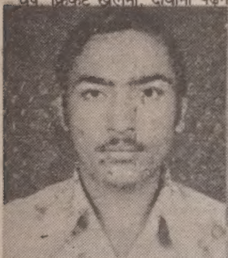
अनिल कुमार शर्मा, ४९ पूर्वी अहिरम, मेरठ - २५०००२, ताश खेलना, फिल्म देखना।



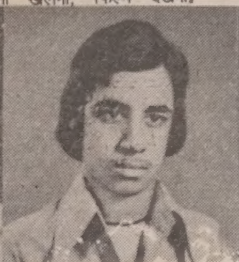
नवीन कुमार शर्मा, ४९ पूर्वी अहिरम मेरठ, २५०००२, ११ वर्ष, खेलना, केरम खेलना, फोटो छपवाना।



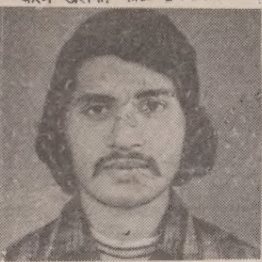
उमेश सक्सेना, ८९५ धोबी बाडा, छोटा बाज़ार कश्मीरी गेट, दिल्ली १३ वर्ष, क्रिकेट खेलना।



मोतीराम टहलवाणी, गुजरी बाजार, परतवाड़ा-४४८०५ १८ वर्ष, फिल्म देखना, गीत सुनना।



महेश कुमार मूलचन्द, ८०-बी प्रेम नगर इन्दौर, १९ वर्ष, दीवाना पढ़ना।



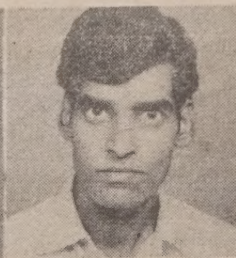
ऋजुवेद प्र० खिंग, म.न. ३२०९ डिस्पेंसरी स्ट्रीट पहाड़गंज, न. दि. २४ वर्ष, बेवफाओं से दोस्ती।

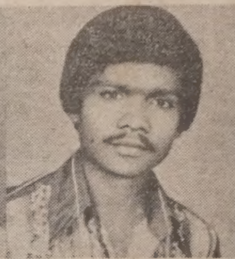


पृथ्वी श्रेष्ठ, श्री राम सा मिल बु० रवस्यौली, लु० अञ्चल (नेपाल), १८ वर्ष, टिकट जमा करना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

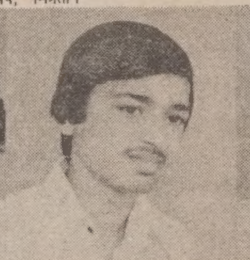

रविन्द्र कुमार धींगडा, २८/११० विष्णुपुरी रामपुर रोड, २६३१३८ हल्द्वानी (नैनीताल), १८ वर्ष,


उमाशंकर दुबे, आनन्द नगर, राय सेन रोड भोपाल, २४ वर्ष पत्र मित्रता।

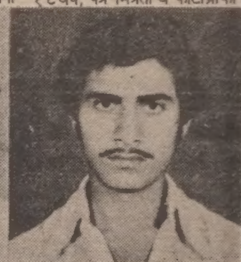

अनिल मिंज, सी०एम० होस्टल, वाकरगंज, बांकीपूर पटना-४ बिहार, १८ वर्ष, पत्र मित्रता, फिल्म देखना


इन्द्रराज जैन, कन्हैया ट्रेडिंग कम्पनी, खगड़िया - ८५१२०४ (बिहार) १८ वर्ष, पत्र-मित्रता व फोटोग्राफी।

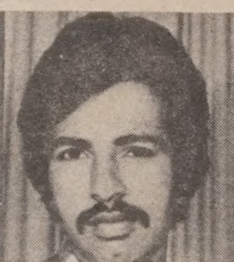

हसानन्द गिडवानी, रामा स्वीट भण्डार स्टेशन रोड बीकानेर, १९ वर्ष, पत्र मित्रता करना पत्र लिखना

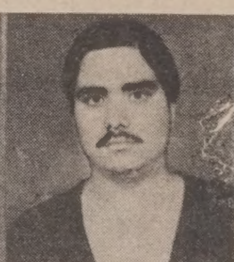

नरेश माहेश्वरी, दुकान नः ३०, कालांवाली, कालांवाली १२५२०१ (सिरसा), १७ वर्ष


बिमल कुमार जैन, सरभंग भूटान, २० वर्ष, टिकट संग्रह, रेड़ियो सुनना, पत्र मित्रता, गिफ्ट देना।


शिवकुमार प्रसाद गुप्ता, नई बाजार छपरा, २० वर्ष, फिल्म देखना तथा दुकान चलाना और घुमना।


मनोजकुमार पाठणी, सराफा बाजार दुर्गा चौक गोंदिया - ४४१६०१, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना।


दयानन्द बत्तरा 'आशु', आशरी गेट जीन्द १२६१०२, १५१/७ बाजरान मोहल्ला, २१ वर्ष, पत्र मित्रता


सतीश कुमार, सतीश जरनल स्टोर, माधापुरी कूचा नः २, २३ वर्ष, सैर करना।


बिजेन्द्र सिंह यादव, १८/१ शिव शंकर पुरी शारदा रोड मेरठ (शहर) १७वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता।


सुरेश कुमार सिंगल, ७२ डी ब्लाक गाँधी पार्क श्री गंगा नगर (राज०), १६ वर्ष, फुटबाल खेलना।


मनोहर लाला कोटवानी, मनोर क्लाथ स्टोर्स, ६ मतरी ४९३७७२, (म०प्र०), १६ वर्ष, गप्पें मारना

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब ८-बी. बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

पता ____________

____

आयु ____ शौक ____________

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु ग


सिम्पल
छाया जयन्त दास
दीवाना

सिम्पल कापड़िया



संघर्ष मैं जुती सिम्पल कापड़िया

जिस तरह डिम्पल ने 'बॉबी' में आकर पर्दे पर लोकप्रियता प्राप्त की, वह भुलाई नहीं जा सकती। अपनी एकमात्र फिल्म से डिम्पल कापड़िया सफलता की ऊंचाई को छू गई।

लेकिन फिल्म उद्योग की सेवा डिम्पल अधिक दिन नहीं कर पाई, क्योंकि बॉबी के प्रदर्शन के तुरन्त बाद राजेश खन्ना और डिम्पल की चटमंगनी पट शादी हो गई।

वह निर्माता जो 'बॉबी की कमाई, से ललचा उठे थे नोटों की थैलियां लेकर डिम्पल से दोबारा फिल्मों में आने का प्रस्ताव रखने लगे। लेकिन डिम्पल ने सब आफर ठुकरा दीं।

तभी डिम्पल के पिता ने अपनी दूसरी बेटी सिम्पल को फिल्मी मैदान में उतारने का फैसला किया और सोचा कि डिम्पल वाली लोकप्रियता भी हासिल कर लेगी। यही नहीं बड़े बजट की फिल्म 'मजनून' का मुहुर्त भी कर दिया जिसका नायक था राजेश खन्ना और नायिका सिम्पल कापड़िया।

देखते ही देखते सिम्पल भी चर्चाओं के घेरे में आ गई। मुहुर्त पर खर्चे गये लाखों रुपये के चर्चे चले। इसी दौरान सिम्पल कापड़िया को अनुरोध में काम मिला।

'मजनूंन' तो आज तक नहीं बन पाई और खटाई में पड़ी है। हां 'अनुरोध' में सिम्पल के चर्चे रहे हैं। लेकिन वह लोकप्रियता सिम्पल को नहीं मिल पाई जो डिम्पल को 'बॉबी' से मिली।

डिम्पल के रंग रूप और व्यक्तित्व में जो अनोखा पन रहा है वह आजतक यादगार है जबकि सिम्पल के व्यक्तित्व में भी आकर्षण है लेकिन बाक्स आफिस पर सिम्पल दर्शकों को डिम्पल की तरह आकर्षित नहीं कर पाई और आज भी सफलता पाने के लिये संघर्षशील है।

सफलता पाने में अभिनय क्षमता व आकर्षक रंगरूप के अतिरिक्त भाग्य अपना विशेष स्थान रखता है। आज फिल्म उद्योग में कितनी ही अभिनेत्रियां हैं जो वर्षों से संघर्ष कर रही हैं लेकिन अपना स्थान अभी तक नहीं बना पाई हैं इन्हीं में एक सिम्पल कापड़िया भी है। जबकि दूसरी तरफ ऐसी नई भाग्यशाली अभिनेत्रियां हैं जो देखते ही देखते लोकप्रियता पा गईं। हेमा मालिनी उनमें प्रमुख है। नवोदिताओं में रंजीता का नाम लिया जा सकता है। ताजा मिसाल है पदमिनी कोहलापुर जो 'गहराई' के प्रदर्शन से पूर्व 'इंसाफ का तराजू' से लोकप्रिय हो चुकी है और आज भारी मांग है इस नवोदिता की।

रेखा, रीना संघर्ष करके जिस तरह लोकप्रिय हुई हैं इसी तरह सिम्पल भी आने वाले कल में ज़रूर चमकेगी।